Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 10
अंक - 32
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

12 सफ़र, 1446-47 हिज्री कमरी, 07 ज़हूर1404 हिज्री शम्सी, 07 अगस्त 2025 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَمَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ خَیۡرٍ فَلِاَنۡفُسِکُمۡ ؕ
وَمَا تُنۡفِقُوۡنَ اِلَّا ابۡتِغَآءَ وَجۡہِ اللّٰہِ ؕ
وَمَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ خَیۡرٍ یُّوَفَّ اِلَیۡکُمۡ
وَاَنۡتُمۡ لَا تُظۡلَمُوۡنَ ○

(सूरः बकरः आयत : 273)

अनुवाद : और जो कुछ भी तुम धन में से ख़र्च करो वह तुम्हारे ही लाभ के लिए है। जबकि तुम तो अल्लाह की प्रसन्नता के अलावा (कभी) खर्च नहीं करते। और जो कुछ भी तुम धन में से खर्च करो वह तुम्हें पूर्ण रूप से लौटा दिया जाएगा। और तुम पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया जाएगा।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

मसीह इब्ने मरयम के पैलातूस की अपेक्षा अधिक नैतिक सिद्ध हुआ क्योंकि अदालत के आदेश में वह साहस और हिम्मत से अदालत का पाबंद रहा और उच्चस्तरीय सिफ़ारिशों की उसने कुछ भी परवाह न की और जातिगत और धार्मिक विचार ने भी उसमें कुछ परिवर्तन पैदा न किया। उसने अदालत की गरिमा का पूर्ण ध्यान रखते हुए ऐसा उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया कि यदि उसके अस्तित्व को कौम का गौरव और शासकों के लिए आदर्श समझा जाए तो अनुपयुक्त न होगा

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

वह मुकद्दमा जो मुझ पर बनाया गया वह हज़रत ईसा इब्ने मरयम के मुकद्दमों से अधिक संगीन था क्योंकि हज़रत ईसा पर जो मुकद्दमा किया गया उसकी बुनियाद मात्र एक धार्मिक विवाद था जो जज के निकट एक साधारण बात थी बल्कि न होने के बराबर थी। परन्तु मुझ पर जो मुकद्दमा बनाया गया वह क़त्ल का प्रयास करने का दावा था, और जैसा कि मसीह के मुक़द्दमों में यहूदी मौलवियों ने जाकर साक्ष्य दी थी। आवश्यक था कि इस मुक़द्दमें में भी कोई मौलवियों में से साक्ष्य देता। अतः इस कार्य के लिए ख़ुदा ने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को चुना, वह एक बड़ा जुब्बा पहन कर साक्ष्य के लिए आया। जैसा कि सरदार काहिन मसीह को सलीब दिलाने के लिए न्यायालय में साक्ष्य देने हेतु आया था, यह भी उपस्थित हुए। अन्तर मात्र इतना था कि सरदार काहिन को पैलातूस की अदालत में कुर्सी मिली थी क्योंकि यहूदियों के सम्मानीय व्यक्तियों को रोम की सरकार में कुर्सी दी जाती थी और कुछ उनमें से आदरणीय न्यायधीश भी थे। इसलिए इस सरदार काहिन ने अदालत के नियमों के अनुसार कुर्सी प्राप्त की और मसीह इब्ने मरयम एक अपराधी की भांति अदालत के समक्ष खड़ा था। परन्तु मेरे मुक़द्दमों में इसके विपरीत हुआ। अर्थात् यह कि शत्रुओं की कामनाओं के विपरीत कैप्टन डगलस ने जो पैलातूस के स्थान पर अदालत की कुर्सी पर विराजमान था मुझे कुर्सी प्रस्तुत की। यह पैलातूस मसीह इब्ने मरयम के पैलातूस की अपेक्षा अधिक नैतिक सिद्ध हुआ क्योंकि अदालत के आदेश में वह साहस और हिम्मत से अदालत का पाबंद रहा और उच्चस्तरीय सिफ़ारिशों की उसने कुछ भी परवाह न की और जातिगत और धार्मिक विचार ने भी उसमें कुछ परिवर्तन पैदा न किया। उसने अदालत की गरिमा का पूर्ण ध्यान रखते हुए ऐसा उत्तम आदर्श प्रस्तुत किया कि यदि उसके अस्तित्व को कौम का गौरव और शासकों के लिए आदर्श समझा जाए तो अनुपयुक्त न होगा। अदालत एक कठिन मामला है। मनुष्य जब तक समस्त सम्बन्धों से पृथक होकर अदालत की कुर्सी पर न बैठे तब तक उस कर्तव्य का अच्छे रंग में निर्वाह नहीं कर सकता। परन्तु हम इस सच्ची साक्ष्य को प्रस्तुत करते हैं कि इस पैलातूस ने इस कर्तव्य को पूर्णरूपेण पूरा किया, यद्यपि कि पहला पैलातूस जो रोम का था, इस कर्तव्य को भली भांति पूर्ण न कर सका और उसकी बुज़दिली ने मसीह को बड़ी-बड़ी मुसीबतों का लक्ष्य बनाया। यह अन्तर हमारी जमाअत में हमेशा स्मरण योग्य रहेगा जब तक कि संसार क़ायम है और ज्यों-ज्यों यह जमाअत लाखों, करोड़ों की संख्या तक पहुंचेगी, वैसे-वैसे ही इस स्वच्छ हृदय शासक को प्रशंसा के साथ याद किया जाएगा। यह उसका सौभाग्य है कि ख़ुदा ने इस कार्य हेतु उसी को चुना। एक शासक के लिए यह अत्यधिक परीक्षा का अवसर है कि उसके समक्ष दो पार्टियां आएं कि एक उनमें से उसी के धर्म का प्रचारक है और दूसरा पक्ष वह है जो उसके धर्म का कट्टर विरोधी है। परन्तु इस बहादुर पैलातूस ने इस परीक्षा को बड़े साहस से सहन किया। उसको उन पुस्तकों के स्थान दिखाए गए जिन में मूर्खता से ईसाई धर्म के विषय में कठोर शब्द समझे गए थे और एक विरोधी अभियान चलाया गया था। परन्तु उसके चेहरे पर परिवर्तन के कोई लक्षण पैदा न हुए क्योंकि वह अपनी प्रकाशमय अन्तरात्मा के कारण वास्तविकता तक पहुँच गया, और चूंकि उसने मुक़द्दमों की वास्तविकता का सच्चे हृदय से विश्लेषण किया था इसलिए ख़ुदा ने उसकी सहायता की, उसके हृदय पर सच्चाई का इल्हाम किया और उस पर वास्तविकता स्पष्ट की गई, वह उससे अति प्रसन्न हुआ कि न्याय का मार्ग उसे प्रतीत हो गया। उसने मात्र न्याय को ध्यान में रखते हुए मुझे विपक्ष के सम्मुख कुर्सी प्रस्तुत की और जब मौलवी मुहम्मद हुसैन ने जो सरदार काहिन की भांति विरोधी साक्ष्य देने आया था मुझे कुर्सी पर बैठा हुआ पाया और मेरे बारे में जिस अपमान को देखने की उसकी मनोकामना थी उस अपमान को उसने न देखा, तब समानता को उपयुक्त समझ कर वह भी उस पैलातूस से कुर्सी का इच्छुक हुआ। परन्तु उस पैलातूस ने उसे फटकारा और डांटकर कहा कि तुझे और तेरे बाप को कभी कुर्सी नहीं मिली। हमारे कार्यालय में तुम्हारी कुर्सी के लिए कोई आदेश नहीं। अब यह अन्तर भी विचार योग्य है कि पहले पैलातूस ने यहूदियों से भयभीत होकर उनके कुछ आदरणीय साक्षियों को कुर्सी दे दी और हज़रत मसीह को जो अपराधी बतौर प्रस्तुत किए गए थे खड़ा रखा। हालांकि वह सच्चे हृदय से मसीह का शुभचिन्तक था अपितु अनुयायियों की भांति था और उसकी पत्नी मसीह की विशेष अनुयायी थी जो ख़ुदा की परम्भक्तिनी कहलाती है। परन्तु भय ने पैलातूस से यहां तक कृत्य कराया कि न्यायोचित न होते हुए भी निरपराध और निर्दोष मसीह को यहूदियों के हवाले कर दिया। मेरी भांति उन पर कोई क़त्ल का आरोप न था, केवल साधारण सा धार्मिक विवाद था। परन्तु वह

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: आज का दिन रहमत का दिन है। आज अल्लाह तआला काबा को अज़मत अता करेगा और अल्लाह तआला कुरैश को हक़ीक़ी इज़्ज़त अता फ़रमाएगा।

अबू सुफ़ियान ने सहाबा को नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इक़्तिदा में नमाज़ अदा करते हुए देखा और कहा : मैंने किस्रा का दरबार भी देखा है और क़ैसर का दरबार भी देखा है, लेकिन उनकी क़ौमों को उनका इतना फ़िदाई नहीं देखा, जितना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जमाअत उनकी फ़िदाई है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "...जो व्यक्ति अबू सुफ़ियान के घर में चला जाए, उसे भी अमन दिया जाएगा। जो मस्जिद-ए-काबा में घुस जाए, उसे भी अमन दिया जाएगा। जो अपने हथियार फेंक दे, उसे भी अमन दिया जाएगा। जो अपना दरवाज़ा बंद करके बैठ जाए, उसे भी अमन दिया जाएगा। जो हकीम बिन हिज़ाम के घर में चला जाए, उसे भी अमन दिया जाएगा।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) का झंडा खड़ा करो और उन मक्का के सरदारों को, जो जूतियाँ लेकर उनके सीने पर नाचा करते थे, जो उनके पैर में रस्सी डालकर घसीटा करते थे, जो उन्हें तपती रेत पर लिटाया करते थे, कह दो कि अगर अपनी और अपनी बीवी-बच्चों की जान बचानी है, तो बिलाल के झंडे के नीचे आ जाओ। मैं समझता हूँ, जब से दुनिया पैदा हुई है, जब से इंसान को ताक़त हासिल हुई है और जब से कोई इंसान दूसरे इंसान से अपने ख़ून का बदला लेने पर तैयार हुआ है और उसे ताक़त मिली है, इस क़िस्म का अज़ीमुश्शान बदला किसी इंसान ने नहीं लिया... यह वह बदला था जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के बदले से भी ज़्यादा शानदार था, इसलिए कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने बाप की ख़ातिर अपने भाइयों को माफ़ किया था। जिसकी ख़ातिर किया, वह उसका बाप था और जिनको किया, वह उसके भाई थे। और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रसूलुल्लाह ने अपने चाचों और भाइयों को एक ग़ुलाम की जूतियों के तुफ़ैल माफ़ किया। भला, यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) का बदला इसके मुक़ाबले में क्या हैसियत रखता है?"

(हज़रत मसीह-ए-मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

ग़ज़वा-ए-फ़तह-ए-मक्का के विवरण में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पुर-मआरिफ़ बयान
श्रीमती अमीना शहनाज़ साहिबा, पत्नी श्रीमान इनामुल्लाह साहिब आफ़ लाहौर का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 जून 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का लश्कर के साथ ख़ामोशी से मक्का के क़रीब पहुँचने और डेरा डालने का वर्णन हो रहा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दस हज़ार जगह आग जलवाई। अबू सुफ़ियान और उसके साथियों ने इसे देखा तो बेहद घबरा गए। इसकी कुछ तफ़सील पहले बयान हुई थी। इस ज़िम्मेदारी में और तफ़सील बयान करता हूँ। हज़रत मसीह-ए-मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु यह तफ़सील एक जगह इस तरह वर्णन करते हैं कि "चूँकि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु अबू सुफ़ियान के पुराने दोस्त थे, इसलिए... उन्होंने अबू सुफ़ियान से अनुरोध किया कि वह उनके साथ सवारी पर बैठ जाए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो। इसलिए उन्होंने उसका हाथ पकड़कर ऊँट पर अपने साथ बिठा लिया और ऊँट को एड़ी लगाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मजलिस में पहुँचे। हज़रत अब्बास डरते थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो उनके साथ पहरा पर मुक़र्रर थे, कहीं उसे क़त्ल न कर दें, लेकिन रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पहले ही फरमा चुके थे कि अगर अबू सुफ़ियान तुम में से किसी को मिले तो उसे क़त्ल न करना। यह सारा नज़ारा अबू सुफ़ियान के दिल में एक अज़ीमुश्शान बदलाव 0 पैदा कर चुका था। अबू सुफ़ियान ने देखा कि कुछ ही साल पहले हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सिर्फ़ एक साथी के साथ मक्का से निकलने पर मजबूर कर दिया था, लेकिन अभी सात ही साल गुज़रे हैं कि वह दस हज़ार क़ुद्दूसियों के साथ मक्का पर बिना ज़ुल्म और बिना तअद्दी के जायज़ तौर पर हमला आवर है और मक्का वालों में ताक़त नहीं कि इसे रोक सकें। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मजलिस तक पहुँचते-पहुँचते कुछ इन ख़यालात की वजह से और कुछ दहशत और ख़ौफ़ की वजह से अबू सुफ़ियान मबहूत-सा हो चुका था। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी यह हालत देखी तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि अबू सुफ़ियान को अपने साथ ले जाओ और रात अपने पास रखो। सुबह इसे मेरे पास लाना। इसलिए रात अबू सुफ़ियान हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ रहा। जब सुबह उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास लाए तो फज्र की नमाज़ का वक़्त था। मक्का के लोग सुबह उठकर नमाज़ पढ़ने को क्या जानते थे। उसने इधर-उधर मुसलमानों को पानी के भरे हुए लोटे लेकर आते-जाते देखा और उसे नज़र आया कि कोई वुज़ू कर रहा है, कोई सफ़ बंदी कर रहा है तो अबू सुफ़ियान ने समझा कि शायद मेरे लिए कोई नई क़िस्म का अज़ाब तजवीज़ हुआ है। इसलिए उसने घबराकर हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि यह लोग सुबह-सुबह यह क्या कर रहे हैं? हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, तुम्हारे लिए डरने की वजह नहीं। यह लोग नमाज़ पढ़ने लगे हैं। इसके बाद अबू सुफ़ियान ने देखा कि हज़ारों मुसलमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे खड़े हो गए हैं और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रुकूअ करते हैं तो सब के सब रुकूअ करते हैं और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सजदा करते हैं तो सब के सब सजदा करते हैं। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु चूँकि पहरा पर होने की वजह से नमाज़ में शामिल नहीं हुए थे, अबू सुफ़ियान ने उनसे पूछा, अब यह क्या कर रहे हैं? मैं देखता हूँ कि जो कुछ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम करते हैं, वही यह लोग करने लग जाते हैं। अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, तुम किन ख़यालात में पड़े हो। यह तो नमाज़ अदा हो रही है, लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अगर इन्हें हुक्म दें कि खाना-पीना छोड़ दो तो यह लोग खाना और पीना भी छोड़ दें।

अबू सुफ़ियान ने कहा: मैंने किस्रा का दरबार भी देखा है और क़ैसर का दरबार भी देखा है, लेकिन उनकी क़ौमों को उनका इतना फ़िदाई नहीं देखा, जितना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जमाअत उनकी फ़िदाई है।

फिर अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: क्या यह नहीं हो सकता कि तुम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आज यह दरख़्वास्त करो कि आप अपनी क़ौम से अफ़्व का मुआमला करें? जब नमाज़ ख़त्म हो चुकी तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु अबू सुफ़ियान को लेकर मुहम्मद रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अबू सुफ़ियान! क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुझ पर यह हक़ीक़त रोशन हो जाए कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं? अबू सुफ़ियान ने कहा: मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान। आप निहायत ही हलीम, निहायत ही शरीफ़ और निहायत ही सिला-ए-रहमी करने वाले इंसान हैं। मैं अब यह बात तो समझ चुका हूँ कि अगर ख़ुदा के सिवा कोई और माबूद होता तो कुछ तो हमारी मदद करता। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऐ अबू सुफ़ियान! क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम समझ लो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ? अबू सुफ़ियान ने कहा: "फिर उसने यही कहा कि 'मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान, इस बारे में अभी मेरे दिल में कुछ शुबहात हैं।" मगर

अबू सुफ़ियान के तरद्दुद के बावजूद उसके दोनों साथी जो उसके साथ ही मक्का से बाहर मुसलमानों के लश्कर की ख़बर लेने के लिए आए थे और जिनमें से एक हकीम बिन हिज़ाम थे, वह मुसलमान हो गए।

इसके बाद अबू सुफ़ियान भी इस्लाम ले आया, मगर उसका दिल ग़ालिबन फ़तह-ए-मक्का के बाद पूरी तरह खुला। ईमान लाने के बाद हकीम बिन हिज़ाम ने कहा: या रसूलुल्लाह! क्या यह लश्कर आप अपनी क़ौम को हलाक करने के लिए उठा लाए हैं? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: इन लोगों ने ज़ुल्म किया, इन लोगों ने गुनाह किया और तुम लोगों ने हुदैबिया में बाँधे हुए अहद को तोड़ दिया और ख़ुज़ाआ के ख़िलाफ़ ज़ालिमाना जंग की। इस मुक़द्दस मक़ाम पर जंग की जिसको ख़ुदा ने अमन अता फ़रमाया हुआ था। हकीम ने कहा: या रसूलुल्लाह! ठीक है आप की क़ौम ने बेशक ऐसा ही किया है लेकिन आप को तो चाहिए था कि बजाय मक्का पर हमला करने के हवाज़िन क़ौम पर हमला करते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: वह क़ौम भी ज़ालिम है लेकिन मैं अल्लाह तआला से उम्मीद करता हूँ कि वह मक्का की फ़तह और इस्लाम का ग़लबा और हवाज़िन की शिकस्त यह सारी बातें मेरे ही हाथ पर पूरी करेगा। इसके बाद अबू सुफ़ियान ने कहा: या रसूलुल्लाह! अगर मक्का के लोग तलवार न उठाएँ तो क्या वह अमन में होंगे? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ! हर शख़्स जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर ले, उसे अमन दिया जाएगा।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: या रसूलुल्लाह! अबू सुफ़ियान फ़ख़्र पसंद आदमी है। इसका मतलब यह है कि मेरी इज़्ज़त का भी कोई सामान किया जाए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बहुत अच्छा। जो शख़्स अबू सुफ़ियान के घर में चला जाए, उसे भी अमन दिया जाएगा। जो मस्जिद-ए-काबा में घुस जाए, उसे भी अमन दिया जाएगा। जो अपने हथियार फेंक दे, उसे भी अमन दिया जाएगा। जो अपना दरवाज़ा बंद करके बैठ जाए, उसे भी अमन दिया जाएगा। जो हकीम बिन हिज़ाम के घर में चला जाए, उसे भी अमन दिया जाएगा।

(दीबाचा तफ़सीर-उल-क़ुरआन, अनवार-उल-उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 338 से 340)

यह सारी तफ़सील दीबाचा तफ़सीर-उल-क़ुरआन में आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने दर्ज फरमाई है।

हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में फ़रमाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में अबू सुफ़ियान एक बड़ा ज़ईफ़-अल-क़ल्ब और कम फ़िरासत वाला आदमी था। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का पर फ़तह पाई तो उससे कहा कि क्या तू अब भी नहीं समझता? तुझे अब तक पता नहीं लगा कि यह इंसानी हाथ का काम नहीं है। उसने जवाब में कहा कि अब समझ आ गई है कि तेरा ख़ुदा सच्चा है। अगर इन बुतों में कुछ होता तो यह हमारी इस वक़्त मदद करते। फिर जब उससे कहा गया कि तू मेरी नबूवत पर ईमान लाता है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया, इससे सवाल किया तो उसने तरद्दुद ज़ाहिर किया और उसकी समझ में तौहीद आई और नबूवत न आई। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि कुछ माद्दे ऐसे होते हैं कि उनमें फ़िरासत कम होती है। जो तौहीद की दलील थी, वही नबूवत की दलील थी, मगर अबू सुफ़ियान इसमें तफ़रीक़ करता रहा। उसने तौहीद और नबूवत को अलग कर दिया तो आप फरमाते हैं कि सब एक तबक़ा के इंसान नहीं होते। कोई औल जैसे सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, उन जैसे होते हैं, कोई औसत दर्जे के और कोई आख़िर दर्जे के।

(उद्धारित मफ़्लूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 414, एडिशन 2022)

इब्न उक़्बा बयान करते हैं कि जब अबू सुफ़ियान और हकीम बिन हिज़ाम वापस जा रहे थे तो हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मुझे अबू सुफ़ियान के इस्लाम के बारे में ख़तरा है। हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि इसे वापस बुला लें यहाँ तक कि यह इस्लाम को समझ ले और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ अल्लाह के लश्करों को देख ले। इब्न अबी शैबा रिवायत करते हैं कि जब अबू सुफ़ियान वापस जाने लगा तो हज़रत अबू बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! अगर आप अबू सुफ़ियान के बारे में हुक्म दें तो इसे रास्ते में रोक लिया जाए। इब्न इसहाक़ बयान करते हैं कि जब अबू सुफ़ियान वापस जा रहा था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से फ़रमाया अबू सुफ़ियान को वादी की घाटी में रोक लो। इसलिए हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अबू सुफ़ियान को जाकर रोक लिया। इस पर अबू सुफ़ियान ने कहा ऐ बनी हाशिम! क्या तुम धोखा देते हो? हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया अहल-ए-नबूवत धोखा नहीं देते। एक और रिवायत के मुताबिक उन्होंने कहा हम हरगिज़ धोखा देने वाले नहीं बल्कि तू सुबह तक इंतेज़ार कर यहाँ तक कि तू अल्लाह के लश्कर को देखे और उसको देखे जो अल्लाह ने मुशरिकों के लिए तैयार किया है। इसलिए हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अबू सुफ़ियान को उस घाटी में रोके रखा यहाँ तक कि सुबह हो गई।(सबलुल् -हुदा जिल्द 5 पृष्ठ 218, दारुल कुतुब अल् इल्मिया बेरूत)

मुख़्तलिफ़ क़बाइल एक-एक दस्ता होकर अबू सुफ़ियान के सामने से गुज़रने लगे। जब एक दस्ता गुज़रा तो उसने कहा ऐ अब्बास! यह कौन हैं? उन्होंने कहा यह ग़िफ़ार हैं, ग़िफ़ार क़बीले के। उसने कहा मुझे ग़िफ़ार से क्या सरोकार। फिर जुहैना गुज़रे तो उसने वैसे ही कहा। फिर सअद बिन हुज़ैम गुज़रे तो उसने वैसे ही कहा कि मुझे इन लोगों से क्या लेना। फिर सुलैम गुज़रे तो उसने फिर वैसे ही कहा यहाँ तक कि एक दस्ता ऐसा आया कि उस जैसा उसने नहीं देखा था। उसने कहा यह कौन हैं? हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा यह अंसार हैं, उनके सरदार हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) हैं जिनके पास झंडा है। हज़रत सअद बिन उबादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने जोश से कहा ऐ अबू सुफ़ियान आज का रोज़ लड़ाई का रोज़ है। आज काबा की हुरमत नहीं रहेगी। अबू सुफ़ियान ने यह सुनकर कहा अब्बास! बर्बादी का यह दिन क्या ख़ूब हो गया अगर मुक़ाबले का मौक़ा मिल जाता। कहते हैं लड़ते तो फिर तो ठीक था अब तो हम लड़ भी नहीं सकते। फिर एक दस्ता आया और वह तमाम दस्तों से छोटा था, उसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा थे और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का झंडा हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास था।

(सहीह बुख़ारी, किताब अल-मग़ाज़ी, बाब ऐन रकज़ा अन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अर-राया यौम अल-फ़तह, हदीस 4280)

एक दूसरी रिवायत में यह इस तरह बयान हुआ है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो उसने कहा या रसूलुल्लाह! क्या आप ने अपनी क़ौम के क़त्ल-ए-आम का हुक्म दे दिया है? क्या आप नहीं जानते कि सअद बिन उबादा क्या कह रहे हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा उसने क्या कहा है? अबू सुफ़ियान ने बताया कि वह इस इस तरह कह रहा था मैं आप को आप की क़ौम के बारे में अल्लाह तआला का वास्ता देता हूँ। आप सारे लोगों से ज़्यादा पाकबाज़, सिला-ए-रहमी करने वाले और रहम फरमाने वाले हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: सअद ने ग़लत कहा। आज का दिन तो रहमत का दिन है। आज अल्लाह तआला काबा को अज़्मत अता करेगा और अल्लाह तआला क़ुरैश को हक़ीक़ी इज़्ज़त अता फ़रमाएगा।

इब्न इसहाक़ ने लिखा है कि हज़रत सअद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने जो कहा था वह मुहाजिरीन में से किसी ने सुन लिया। इब्न हिशाम ने इस वाक़िए को बयान किया है कि वह हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) थे जिन्होंने सुना। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हम अमन में नहीं। शायद हज़रत सअद क़ुरैश पर हमला कर दें। दूसरी रिवायत के मुताबिक यह बात हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़

(रज़ियल्लाहु अन्हु) और हज़रत उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कही। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत सअद की तरफ़ पैग़ाम भेजा और उनसे झंडा लिया और उनके बेटे हज़रत क़ैस (रज़ियल्लाहु अन्हु) को अता कर दिया।

(सबलुल् -हुदा जिल्द 5 पृष्ठ 221-222, दारुल कुतुब अल् इल्मिया बेरूत)

इसकी तफ़सील हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने भी तारीख़ों की किताबों से लेकर बयान फरमाई है। फ़रमाया कि "जिस वक़्त यह लश्कर अबू सुफ़ियान के सामने से गुज़र रहा था, अंसार के कमांडर सअद बिन उबादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अबू सुफ़ियान को देखकर कहा आज ख़ुदा तआला ने हमारे लिए मक्का में दाख़िल होना तलवार के ज़ोर से हलाल कर दिया है। आज कुरैशी क़ौम ज़लील कर दी जाएगी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो उसने बुलंद आवाज़ से कहा या रसूलुल्लाह! क्या आप ने अपनी क़ौम के क़त्ल की इजाज़त दे दी है? अभी अभी अंसार के सरदार सअद (रज़ियल्लाहु अन्हु) और उनके साथी ऐसा ऐसा कह रहे थे। उन्होंने बुलंद आवाज़ में यह कहा है कि आज लड़ाई होगी और मक्का की हुरमत आज हम को लड़ाई से बाज़ नहीं रख सकेगी और कुरैश को हम ज़लील करके छोड़ेंगे। या रसूलुल्लाह! आप तो दुनिया में सबसे ज़्यादा नेक, सबसे ज़्यादा रहीम और सबसे ज़्यादा सिला-ए-रहमी करने वाले इंसान हैं। क्या आज अपनी क़ौम के ज़ुल्मों को भूल न जाएँगे? अबू सुफ़ियान की यह शिकायत और इल्तिजा सुनकर वह मुहाजेरीन भी जिन को मक्का की गलियों में पीटा और मारा जाता था, जिन को घरों और जायदादों से बेदख़ल किया जाता था, तड़प गए और उनके दिलों में भी मक्का के लोगों की निस्बत रहम पैदा हो गई थी और उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! अंसार ने मक्का वालों के मज़ालिम के जो वाक़िआत सुने हुए हैं आज उनकी वजह से हम नहीं जानते कि वह कुरैश के साथ क्या मुआमला करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। अबू सुफ़ियान! सअद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ग़लत कहा है आज रहम का दिन है। आज अल्लाह तआला कुरैश और ख़ाना काबा को इज़्ज़त बख़्शने वाला है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को सअद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की तरफ़ भिजवाया और फ़रमाया अपना झंडा अपने बेटे क़ैस को दे दो कि वह तुम्हारी जगह अंसार के लश्कर का कमांडर होगा। इस तरह

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मक्का वालों का दिल भी रख लिया और अंसार के दिलों को भी सदमा पहुँचने से महफ़ूज़ रखा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़ैस (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर पूरा एतबार भी था क्योंकि क़ैस (रज़ियल्लाहु अन्हु) निहायत ही शरीफ़ तबीयत के नौजवान थे। ऐसे शरीफ़ कि तारीख़ में लिखा है कि उनकी वफात के क़रीब जब बाज़ लोग उनकी ईयादत के लिए आए और बाज़ नहीं आए तो उन्होंने अपने दोस्तों से पूछा कि क्या वजह है कि बाज़ जो मेरे वाक़िफ़ हैं मेरी ईयादत के लिए नहीं आए। उनके दोस्तों ने कहा आप बड़े मुख़य्यर आदमी हैं। आप हर शख़्स को उसकी तकलीफ़ के वक़्त क़र्ज़ा दे देते हैं। शहर के बहुत से लोग आप के मक़रूज़ हैं और वह इसलिए आप की ईयादत के लिए नहीं आए कि शायद आप को ज़रूरत हो और आप उनसे रुपया माँग बैठें। आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया ओहो मेरे दोस्तों को बिला-वजह तकलीफ़ हुई। मेरी तरफ़ से तमाम शहर में मुनादी कर दो कि हर शख़्स जिस पर क़ैस का क़र्ज़ा है वह उसे माफ़ है। इस पर इस क़दर लोग उनकी ईयादत के लिए आए कि उनके मकान की सीढ़ियाँ टूट गईं।"

(दीबाचा तफ़सीर-उल-कुरआन, अनवार-उल-उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 342-343)

इब्न अबी शैबा ने रिवायत किया है कि हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप मुझे इजाज़त दें तो मैं अहल-ए-मक्का के पास जाऊँ और उन्हें दावत दूँ और आप उन्हें अमन अता कर दें। इसलिए वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सफ़ेद शहबा नामी ख़च्चर पर सवार होकर रवाना हो गए। वह मक्का में दाख़िल हुए और उन्होंने कहा ऐ अहल-ए-मक्का! इस्लाम ले आओ, नजात पा जाओगे। तुम्हारे पास इतना बड़ा लश्कर आया है कि जिस का मुक़ाबला करने की तुम में ताक़त नहीं है।

(उद्धारित सबलुल् -हुदा जिल्द 5 पृष्ठ 223, दारुल कुतुब अल् इल्मिया बेरूत)

हज़रत मसीह-ए-मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान फरमाते हैं कि "जब लश्कर गुज़र चुका तो अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अबू सुफ़ियान से कहा।" यह देख रहा था जैसे बयान हुआ है कि सामने से लश्कर गुज़र रहा था। अबू सुफ़ियान से कहा कि "अब अपनी सवारी दौड़ाकर मक्का पहुँचो और उन लोगों को इत्तिला दे दो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आ गए हैं और उन्होंने इस इस शक्ल में मक्का के लोगों को अमान दी है। जबकि अबू सुफ़ियान अपने दिल में ख़ुश था कि मैंने मक्का के लोगों की निजात का रास्ता निकाल लिया है। उसकी बीवी हिन्दा ने जो इब्तिदा-ए-इस्लाम से मुसलमानों से बुग़्ज़ और कैना रखने की लोगों को तालीम देती चली आई थी और बावजूद काफ़िर होने के फ़िल-हक़ीक़त एक बहादुर औरत थी, आगे बढ़कर अपने ख़ाविंद की दाढ़ी पकड़ी और मक्का वालों को आवाज़ें देने शुरू कीं कि आओ और इस बूढ़े अहमक़ को क़त्ल कर दो कि बजाए इस के कि तुम को यह नसीहत करता कि जाओ और अपनी जानों और अपने शहर की इज़्ज़त के लिए लड़ते हुए मारे जाओ यह तुम में अमन का इलान कर रहा है। अबू सुफ़ियान ने उसकी हरकत को देखकर कहा कि बेवक़ूफ़ यह इन बातों का वक़्त नहीं जा और अपने घर में छिप जा। मैं इस लश्कर को देखकर आया हूँ जिस लश्कर के मुक़ाबले की ताक़त सारे अरब में नहीं है।"

(दीबाचा तफ़सीर-उल-कुरआन, अनवार-उल-उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 343-344)

इस्लामी लश्कर के मक्का में दाख़िल होने का वाक़िया लिखा है। बुख़ारी में हज़रत उरवा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हु) को हुक्म दिया कि मक्का के बालाई हिस्से कदा से दाख़िल हों। वह अपना झंडा हजून में गाड़ दें और आप के आने तक जगह न छोड़ें। हजून वादी-ए-मुहस्सब की तरफ़ एक पहाड़ है जो बैतुल्लाह से डेढ़ मील के फ़ासिले पर है।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) लश्कर के दाईं तरफ़, दाईं हिस्से पर मुक़र्रर थे। उनके दस्ते में असलम, सुलैम, ग़िफ़ार, मुज़ैना और जुहैना के क़बाइल शामिल थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें हुक्म दिया कि वह मक्का श्रीमती के नशीबी इलाक़े लीत से दाख़िल हों। आप ने उन्हें क़रीबी घरों के पास झंडा गाड़ देने का हुक्म दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह (रज़ियल्लाहु अन्हु) का तक़र्रर प्यादा दस्ते पर किया।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने उमरा को हुक्म दे रखा था कि वह लड़ाई से अपने हाथ रोके रखें। लड़ाई नहीं करनी। सिर्फ़ उस के साथ क़िताल करें जो उनके साथ क़िताल करे। इब्न इसहाक़ ने लिखा है कि सफ़वान, इक़रमा और सुहैल ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लड़ाई के लिए लोगों को बुलाया। उन्होंने लोगों को ख़न्दमा में जमा किया जो मिना के रास्ते में मक्का का एक मशहूर पहाड़ है। कुरैश, बनू बक्र और हुज़ैल के लोग उनके पास जमा थे। उन्होंने हथियार पहन रखे थे। वह अल्लाह की क़समें खा रहे थे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कभी भी ताक़त से मक्का में दाख़िल नहीं हो सकेंगे।

बनू दील यानी बनू बक्र के एक शख़्स जिमाश बिन क़ैस ने जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आमद के बारे में सुना तो वह अपने हथियार दुरुस्त करने लगा। उसकी बीवी ने उससे कहा कि यह तैयारी किस लिए हो रही है? उसने कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और उनके साथियों के लिए। उस औरत ने कहा बिल्लाह! आज मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और उनके साथियों के सामने कोई चीज़ नहीं ठहर सकती। अक़्लमंद औरत थी। जिमाश बिन क़ैस ने निहायत तकब्बुर से और तमस्ख़राना अंदाज़ में कहा मुझे उम्मीद है कि उन में से किसी एक को तेरी ख़िदमत में पेश कर दूँगा यानी मुसलमान को गुलाम बनाकर लाऊँगा। तुम्हें एक शख़्स की ज़रूरत है जो तुम्हारी ख़िदमत करे तो तुम्हारे लिए ग़ुलाम ले के आऊँगा। उस औरत ने कहा तेरे लिए बर्बादी हो ऐसा न करो। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ क़िताल न करो। बिल्लाह! तेरी राय दुरुस्त नहीं है। काश तुम ने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और उनके साथियों को देख लिया होता। जिमाश ने कहा तुम अन्करीब देख लो गी। फिर वह सफ़वान, इक़रिमा और सुहैल के साथ ख़न्दमा चला गया। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हु) वहाँ से इस तरह दाख़िल हुए जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें हुक्म दिया था तो उन्होंने एक जत्था देखा जिन्होंने उन्हें दाख़िल होने से रोका और उनके लिए हथियार लहराए और उन पर तीर अंदाज़ी की। उन्होंने कहा तुम ताक़त के ज़रिए यहाँ दाख़िल नहीं हो सकते। हज़रत ख़ालिद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपने साथियों को पुकारा और मुशरिकीन के साथ जंग हुई। बनू बक्र के बीस और हुज़ैल के तीन या चार अफ़राद मारे गए। इब्न इसहाक़ के मुताबिक मुशरिकीन के बारह या तेरह आदमी मारे गए। उन्हें बुरी तरह शिकस्त हुई। वह हर तरफ बिखर गए। एक गिरोह पहाड़ों पर चढ़ गया। जिमाश बिन क़ैस जो बड़े फ़ख़्र से अपनी बीवी को जवाब दे रहा था वह वहाँ से भागा और अपने घर पहुँचकर बीवी से कहा दरवाज़ा बंद कर दो। बीवी ने अपने ख़ाविंद से पूछा कि वह तुम्हारे दावे कहाँ गए? तुम ने तो अभी कहा था मैं ग़ुलाम ले के आऊँगा तो उसने मुआज़िरत-ख़्वाहाना लहजे में जवाब दिया और कुछ शेर पढ़े, पढ़कर सुनाए जिन का मफ़हूम यह था कि अगर तू ख़न्दमा की जंग ख़ुद देख लेती जब सफ़वान भी भाग खड़ा हुआ और इक़रिमा भी। इन सब का इस्तिक़बाल तलवारों ने किया। तलवारें

हर कलाई और हर खोपड़ी पर पड़कर उस को काट रही थीं और बजुज़ शोर के कुछ सुनाई न दे रहा था। हमारे पीछे उनकी धाड़ें और सीने से उठने वाले ग़ल्ल-ओ-ग़ुस्सा उबलता हुआ सुनाई दे रहा था। लिहाज़ा तू अपनी ज़बान से मलामत का छोटा सा कलमा भी न निकाल।

बुख़ारी में है कि हज़रत ख़ालिद के घुड़सवारों में से दो शख़्स मारे गए। हज़रत हुबैश बिन अशअर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और हज़रत कुर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी (रज़ियल्लाहु अन्हु)।

(सहीह बुख़ारी, किताब अल-मग़ाज़ी, बाब ऐन रकज़ा अन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अर-राया यौम अल-फ़तह, हदीस 4280)(सबलुल् -हुदा जिल्द 5 पृष्ठ 227-228, दारुल कुतुब अल् इल्मिया बेरुत)(सीरत इनसाइक्लोपीडिया जिल्द 9 पृष्ठ 149-150, दार अस-सलाम)(शरह ज़रक़ानी जिल्द 3 पृष्ठ 416, दारुल कुतुब अल् इल्मिया बेरुत)(फ़तह अल-बारी जिल्द 8 पृष्ठ 13, क़दीमी कुतुब ख़ाना आराम बाग़ कराची)(फ़रहंग-ए-सीरत पृष्ठ 116, 100, ज़वार अकैडमी)

मक्का वालों के लिए अमन के ऐलान के बारे में लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबूसुफ़ियान को अमन दिया और हकीम बिन हज़ाम को अमन दिया और फ़रमाया कि मक्का जाकर ऐलान कर दें कि जो हथियार फेंक देगा वह अमन में होगा। जो अपने घर में दाख़िल हो जाएगा वह अमन पाएगा। जो ख़ाना काबा के सहन में चला जाएगा वह अमन पाएगा। जो अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाएगा वह अमन पाएगा और जो हकीम बिन हज़ाम के घर में दाख़िल हो जाएगा वह भी अमन पाएगा।

अब जब मक्का वाले अमन हासिल कर रहे थे, ऐसे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने जाननिसार आशिक़, वफ़ादार साथियों को नहीं भूले थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यक़ीनन कुछ साल पहले मक्का की गलियों में किए जाने वाले ज़ुल्म व सितम भी याद आ रहे होंगे। वह बिलाल भी जिसको रस्सियों से बाँधकर यहाँ उन्हीं पथरीली गलियों में घसीटा जाता था। आज वह बिलाल इस फ़ातिह फ़ौज में शामिल था। उनके दिल व दिमाग़ में भी ज़ुल्म व सितम के सारे मंज़ार ताज़ा हो चुके होंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसका इंतक़ाम लेना भी ज़रूरी समझा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस क़दर ख़ूबसूरत इंतक़ाम लिया। हज़रत मस्लह मौऊदरह ने इस बारे में बयान फ़रमाया है कि "इसके बाद अबी रुवैहर्रह जिनको आपने बिलाल हबशी ग़ुलाम का भाई बनाया था, उनके मुताल्लिक़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम इस वक़्त अबी रुवैहर्रह को अपना झंडा देते हैं। जो शख़्स अबी रुवैहर्रह के झंडे के नीचे खड़ा होगा, हम उसको भी कुछ नहीं कहेंगे। और बिलाल से कहा तुम साथ-साथ यह ऐलान करते जाओ कि जो शख़्स अबी रुवैहर्रह के झंडे के नीचे आ जाएगा, उसको अमन दिया जाएगा।

इस हुक्म में क्या ही लतीफ़ हिक्मत थी। मक्का के लोग बिलाल के पैरों में रस्सी डालकर उसको गलियों में खींचा करते थे। मक्का की गलियाँ, मक्का के मैदान बिलाल के लिए अमन की जगह नहीं थे बल्कि अज़ाब और तज़्लील और तज़्हीक की जगह थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़्याल फ़रमाया कि बिलाल का दिल आज इंतक़ाम की तरफ़ बार-बार मायल होता होगा। इस वफ़ादार साथी का इंतक़ाम लेना भी निहायत ज़रूरी है। मगर यह भी ज़रूरी है कि हमारा इंतक़ाम इस्लाम की शान के मुताबिक़ हो। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिलाल का इंतक़ाम इस तरह नहीं लिया कि तलवार के साथ उसके दुश्मनों की गर्दनें काट दी जाएँ बल्कि उसके भाई के हाथ में एक बड़ा झंडा देकर खड़ा कर दिया और बिलाल को इस ग़रज़ के लिए मुक़र्रर कर दिया कि वह ऐलान कर दे कि जो कोई मेरे भाई के झंडे के नीचे आकर खड़ा होगा, उसे अमन दिया जाएगा। कैसा शानदार यह इंतक़ाम था। कैसा हसीन यह इंतक़ाम था। जब बिलाल बुलंद आवाज़ से यह ऐलान करता होगा कि ऐ मक्का वालो! आओ मेरे भाई के झंडे के नीचे खड़े हो जाओ, तुम्हें अमन दिया जाएगा तो उसका दिल ख़ुद ही इंतक़ाम के जज़्बात से ख़ाली होता जाता होगा और उसने महसूस कर लिया होगा कि जो इंतक़ाम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए तजवीज़ किया है, उससे ज़्यादा शानदार और उससे ज़्यादा हसीन इंतक़ाम मेरे लिए और कोई नहीं हो सकता।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 340-341)

एक और जगह आपरह ने इसे इस तरह बयान फ़रमाया है कि "इस वाक़िए में जो सबसे ज़्यादा अज़ीमुश्शान बात है वह बिलाल का झंडा है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिलाल का झंडा बनाते हैं और फ़रमाते हैं जो शख़्स बिलाल के झंडे के नीचे खड़ा हो जाएगा।" यानी उसके भाई का झंडा यहाँ इससे यही मुराद है। "उसको पनाह दी जाएगी हालाँकि सरदार तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे मगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद क़ुरबानी करने वाले अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु थे मगर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का भी कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। उनके बाद मुसलमान होने वाले रईस उमररह थे मगर उमररह का भी कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। उनके बाद उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मक़बूल थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद थे मगर उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का भी कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। उनके बाद अलीरह थे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भाई भी थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामाद भी थे मगर अलीरह का कोई झंडा नहीं खड़ा किया जाता। फिर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ वह शख़्स थे जिनके मुताल्लिक़ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि आप वह शख़्स हैं कि जब तक आप ज़िंदा हैं मुसलमान क़ौम में इख़्तिलाफ़ नहीं होगा लेकिन अब्दुर्रहमानरह का कोई झंडा नहीं बनाया जाता। फिर अब्बास आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा थे और कभी-कभी वह गुस्ताख़ी भी कर लेते थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़फ़ा नहीं होते मगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका भी कोई झंडा नहीं बनाया। फिर सारे रुअसा और चोटी के आदमी मौजूद थे, ख़ालिद बिन वलीदरह जो एक सरदार का बेटा ख़ुद बड़ा नामवर इंसान था मौजूद था। अम्र बिन आसरह एक सरदार का बेटा था इसी तरह और बड़े-बड़े सरदारों के बेटे थे मगर उनमें से किसी एक का भी झंडा नहीं बनाया जाता। झंडा बनाया जाता है तो बिलाल का बनाया जाता है। क्यों? इसकी क्या वजह थी? इसकी वजह यह थी कि ख़ाना काबा पर जब हमला होने लगा था अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु देख रहा था कि जिनको मारा जाने वाला है वह उसके भाई-बंद हैं और उसने ख़ुद भी कह दिया था कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या अपने भाइयों को मारेंगे। वह ज़ुल्मों को भूल चुका था और जानता था कि यह मेरे भाई हैं। उमररह भी कहते तो यही थे कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! इन काफ़िरों को मारिए मगर फिर भी जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनको माफ़ करने पर आए तो वह अपने दिल में यही कहते होंगे कि अच्छा हुआ हमारे भाई बख़्शे गए। उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और अलीरह भी कहते होंगे कि हमारे भाई बख़्शे गए। इन्होंने हमारे साथ सख़्तियाँ कर लीं तो क्या हुआ। ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनको माफ़ करते वक़्त यही समझते होंगे कि इनमें मेरे चचा भी थे, भाई भी थे, इनमें मेरे दामाद, अज़ीज़ और रिश्तेदार भी थे अगर मैंने इनको माफ़ कर दिया तो अच्छा ही हुआ मेरे अपने रिश्तेदार बच गए। सिर्फ़ एक शख़्स था जिसकी मक्का में कोई रिश्तेदारी नहीं थी, जिसकी मक्का में कोई ताक़त न थी, जिसका मक्का में कोई साथी न था और उसकी बेकसी की हालत में उस पर वह ज़ुल्म किया जाता जो न अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु पर हुआ, न अलीरह पर हुआ, न उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर हुआ, न उमररह पर हुआ बल्कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी नहीं हुआ। जलती और तपती हुई रेत पर बिलाल नंगा लिटा दिया जाता था। तुम देखो! नंगे पाँव भी मई और जून में नहीं चल सकते।" यहाँ तो गर्मी कम है लेकिन गर्म मुल्कों में नंगे पाँव भी नहीं चल सकते मई-जून के महीने में तो वहाँ भी गर्मी में नंगे पाँव नहीं चल सकते। "उसको नंगा करके तपती रेत पर लिटा दिया जाता था, फिर कीलों वाले जूते पहनकर नौजवान उसके सीने पर नाचते थे और कहते थे कहो! ख़ुदा के सिवा और माबूद हैं। कहो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रसूलुल्लाह झूठा है और बिलाल आगे से अपनी हब्शी ज़बान में जब वह बहुत मारते थे कहते अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह। अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह। वह शख़्स आगे से यही जवाब देता था कि तुम मुझ पर कितना भी ज़ुल्म करो मैंने जब देख लिया है कि ख़ुदा एक है तो दो कैसे कह दूँ और जब मुझे पता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे रसूल हैं तो मैं उन्हें झूठा कैसे कह दूँ। इस पर वह और मारना शुरू कर देते थे। महीनों गर्मियों के मौसम में उसके साथ यही हाल होता था। इसी तरह सर्दियों में वह यह करते थे कि उनके पैरों में रस्सी डालकर उन्हें मक्का की पत्थरों वाली गलियों में घसीटते थे। चमड़ा उनका ज़ख़्मी हो जाता था। वह घसीटते थे और कहते थे कहो! झूठा है मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। कहो ख़ुदा के सिवा और माबूद हैं। तो वह कहते अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह। अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह। अब जबकि इस्लामी लश्कर दस हज़ार की तादाद में दाख़िल होने के लिए आया। बिलाल के दिल में ख़्याल आया होगा कि आज इन बूढ़ों का बदला लिया जाएगा। आज इन मारों का मुआवज़ा मुझे मिलेगा। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो गया वह माफ़, जो ख़ाना काबा में दाख़िल हो गया वह माफ़, जिसने अपने हथियार फेंक दिए वह माफ़, जिसने अपने घर के दरवाज़े बंद कर लिए वह माफ़। तो बिलाल के दिल में ख़्याल आता होगा कि यह तो अपने सारे भाइयों को माफ़ कर रहे हैं और अच्छा कर रहे हैं लेकिन मेरा बदला तो रह गया।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा कि आज सिर्फ़ एक शख़्स है जिसको मेरे माफ़ करने से तकलीफ़ पहुँच सकती है और वह बिलाल है कि जिनको मैं माफ़ कर रहा हूँ वह उसके भाई नहीं। जो उसको दुख दिया गया वह और किसी को नहीं दिया गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं इसका बदला लूँगा और इस तरह लूँगा कि मेरी नबूवत की भी शान बाक़ी रहे और बिलाल का दिल भी ख़ुश हो जाए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिलाल का झंडा खड़ा करो और उन मक्का के सरदारों को जो जूतियाँ लेकर उसके सीने पर नाचा करते थे, जो उसके पैर में रस्सी डालकर घसीटा करते थे, जो उसे तपती रेतों पर लिटाया करते थे कह दो कि अगर अपनी और अपनी बीवी बच्चों की जान बचानी है तो बिलाल के झंडे के नीचे आ जाओ। मैं समझता हूँ जब से दुनिया पैदा हुई है, जब से इंसान को ताक़त हासिल हुई है और जब से कोई इंसान दूसरे इंसान से अपने ख़ून का बदला लेने पर तैयार हुआ है और उसको ताक़त मिली है इस क़िस्म का अज़ीमुश्शान बदला किसी इंसान ने नहीं लिया।

जब बिलाल का झंडा ख़ाना काबा के सामने मैदान में गाड़ा गया होगा, जब अरब के वह रुअसा जो उसको पैरों से मसला करते थे और कहा करते थे बोलता है कि नहीं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम झूठा है जब वह दौड़-दौड़कर और अपनी बीवी बच्चों के हाथ पकड़-पकड़कर और ला-लाकर बिलाल के झंडे के नीचे लाते होंगे कि हमारी जान बच जाए तो उस वक़्त बिलाल का दिल और उसकी जान किस तरह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर निछावर हो रही होगी। वह कहता होगा मैंने तो ख़बर नहीं इन कुफ़्फ़ार से बदला लेना था या नहीं या ले सकता था कि नहीं। अब वह बदला ले लिया गया है कि हर शख़्स जिसकी जूतियाँ मेरे सीने पर पड़ती थीं उसके सर को मेरी जूती पर झुका दिया गया है।

यह वह बदला था जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बदले से भी ज़्यादा शानदार था इसलिए कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने बाप की ख़ातिर अपने भाइयों को माफ़ किया था। जिसकी ख़ातिर किया वह उसका बाप था और जिनको किया वह उसके भाई थे और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चचाओं और भाइयों को एक गुलाम की जूतियों के तुफ़ैल माफ़ किया। भला यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का बदला इसके मुक़ाबले में क्या हैसियत रखता है।"

(सैर रूहानी, अनवारुल उलूम जिल्द 24 पृष्ठ 270 से 273)

एक कमज़ोर शख़्स जिसका बचपन और जवानी सरदाराने क़ुरैश की गुलामी में गुज़री उसकी ऐसी दिलजोई और ऐसी इज़्ज़तअफ़्ज़ाई आपने की है जिसकी मिसल जैसा कि बयान हुआ है तारीख़-ए-आलम में नहीं मिलती। यह हमेशा के लिए यादगार रहेगी। पस यह है हमारे आक़ा व मुताअ सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बदला लेने का उस्वा। अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहम्मदिव व अला आलि मुहम्मदिव व बारिक व सल्लिम इन्नका हमीदुम मजीद।

इब्ने हिशाम ने लिखा है कि फ़त्ह-ए-मक्का में मुहाजिरीन का शिआर या बनी अब्दुर्रहमान था। यानी ऐ अब्दुर्रहमान के बेटो। ख़ज़रज का शिआर या बनी अब्दिल्लाह था यानी ऐ अब्दुल्लाह के बेटो और औस का शिआर या बनी उबैदुल्लाह था यानी ऐ उबैदुल्लाह के बेटो।

(अस्सीरतुन्नबविया लिब्ने हिशाम पृष्ठ 742 दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अज़ाख़िर के पहाड़ी रास्ते पर आए जो कदा का दूसरा नाम है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़त्ह-ए-मक्का के दिन यहीं से मक्का में दाख़िल हुए। तो आपने तलवारों की चमक देखी तो फ़रमाया कि क्या मैंने तुम्हें क़त्ल से मना नहीं किया था? कहा गया कि ख़ालिद से मुक़ाबला हुआ तो उन्होंने भी शमशीर-ज़नी की। पहले दुश्मन ने हमला किया था। आपने फ़रमाया: अल्लाह तआला का फ़ैसला सबसे बेहतर है।

(अत-तबक़ातुल कुबरा जिल्द 2 पृष्ठ 103 दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

(फ़रहंग-ए-सीरत पृष्ठ 242,34 ज़व्वार अकादमी)

यानी अल्लाह तआला यह दिखाना चाहता था, काफ़िरों को दिखाना चाहता था कि आज तुम ताक़त के ज़ोर पर मुसलमानों को मक्का में दाख़िल होने से रोक नहीं सकते। यह ख़ुदा तआला का एक अटल फ़ैसला है जिसे कोई टाल नहीं सकता। यह थी मक्का में दाख़िल होने की इब्तिदाई तारीख़ जो बयान की है। इंशा अल्लाह आइंदा भी इसका बयान होगा।

इस वक़्त मैं एक मरहूमा का ज़िक्र करना चाहता हूँ। नमाज़ के बाद उनका जनाज़ा पढ़ाऊँगा। यह हैं श्रीमती अमीना शहनाज़ साहिबा पत्नी श्रीमान इनामुल्लाह साहिब लाहौर जो गुज़िश्ता दिनों में सत्तावन साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके वालिद श्रीमान मुहम्मद दीन साहिब के ज़रिए आई जिन्होंने 1934 में पंद्रह साल की उम्र में क़ादियान जाकर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस-सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत की थी। मरहूमा अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसिया थीं। परिजनों में पति के अलावा एक बेटा और चार बेटियाँ शामिल हैं। उनके बेटे श्रीमान वजीहुल्लाह साहिब सेनेगल में मुबल्लिग़ हैं और वहाँ ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपनी वालिदा के जनाज़े और तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके।

उनके बेटे वजीहुल्लाह साहिब जो मुरब्बी हैं, यह लिखते हैं कि ख़ाकसार की वालिदा एक इंतिहाई नीक सीरत ख़ातून थीं। नमाज़-रोज़ा की पाबंद, क़ुरआन करीम की बाक़ायदा तिलावत करती थीं। बच्चों की भी पूरी निगरानी करती थीं। ख़िलाफ़त अहमदिया से बहुत मुहब्बत करने वाली थीं। कोई भी परेशानी या ख़ुशी का इल्म होता तो मुझसे कहा करती थीं कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त को ख़त लिखो। मेहमानों की दिलजोई करने वाली और अपनी हैसियत से ज़्यादा उनकी ख़िदमत करती थीं। ग़ैर अहमदी पड़ोसियों के साथ भी मुहब्बत का सुलूक था। बावजूद इसके कि कुछ पड़ोसी मुख़ालिफ़त भी करते थे लेकिन आप हमेशा उनका, हमसाये का हक़ अदा करती थीं।

उनके पति इनामुल्लाह साहिब कहते हैं कि मेरे साथ बेहतरीन ज़िंदगी गुज़ारी। सारी ज़िंदगी जितनी जमाअती ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली उसमें मेरा भरपूर साथ दिया। अगर जमाअती काम की वजह से सारा दिन या रात भी घर से बाहर रहना पड़ता तो कभी शिकायत नहीं की। बड़ी मेहमान-नवाज़ थीं। वफ़ात से एक महीना पहले भी तक़रीबन बाईस जमाअती मेहमानों के लिए ख़ुद खाना बनाया। ग़ुरबा की हर मुमकिन मदद करती थीं। चंदा जात की अदायगी में अपने मरहूमीन की तरफ़ से भी चंदा अदा करती थीं। औलाद की तरबियत भी बेहतरीन रंग में करने की कोशिश की। लंबा अर्सा अपने हल्क़े में सैक्रेटरी माल की ख़िदमत अंजाम दी और वफ़ात के वक़्त भी इसी ख़िदमत पर मामूर थीं।

उनके बड़े भाई कहते हैं कि मेरी बहन मुहब्बत करने वाली और हर एक से शफ़क़त करने वाली थीं। पंज-वक़्ता नमाज़ें बचपन से पढ़ने वाली, तहज्जुद-गुज़ार और ख़िलाफ़त से वालहाना मुहब्बत करने वाली, बाक़ायदा क़ुरआन करीम की तिलावत करने वाली, बच्चों और ख़ानदान के दूसरे जो भी बचे थे उनके घर जाते थे उनको भी नमाज़ की पाबंदी और तिलावत करने की तलक़ीन करतीं।

ग़ैर-ए-जमात के साथ भी अच्छा ताल्लुक़ था। एक ग़ैर अहमदी पड़ोसन कहती है कि मेरे साथ उनका बीस साल का ताल्लुक़ था और मुझसे बहनों जैसा सुलूक किया करती थीं। मेरे बच्चों से माँ जैसा सुलूक था। मेरे बचे भी उनको अम्मी जी ही कहा करते थे। हर काम में मुझे हमेशा बेहतरीन मशवरा देती थीं। शरीफ़ ग़ैर-ए-जमात भी हैं जो ताल्लुक़ भी रखते हैं और फिर क़द्र भी करते हैं।

सदर लजना रचना टाउन कहती हैं कि मरहूमा की वफ़ात से हमारी मजलिस की एक इंतिहाई मुख़लिस और जमाअती निज़ाम से वफ़ा-शिआर लजना चली गई। तक़रीबन बीस साल से सैक्रेटरी माल का काम सरअंजाम दे रही थीं और बहुत इख़्लास से काम कर रही थीं। जमाअती तहरीकात में ख़ुद बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थीं। हालात कैसे भी हों किसी को ख़ाली हाथ नहीं भेजती थीं। हर गर्मियों में यह कहती हैं बाक़ी बचियों ने भी बेटियों ने भी लिखा है कि हर हफ़्ते गुरुवार के रोज़ रोज़ा रखा करती थीं। उनके घर में कोई प्रोग्राम रखा जाता था तो खुले दिल से उसे क़ुबूल करतीं। उसकी मेहमान-नवाज़ी भी करतीं।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। एक बेटा जो मुरब्बी है जो मैंने ज़िक्र किया है मैदान-ए-अमल में है और वहाँ होने की वजह से जनाज़े में शामिल भी नहीं हो सका। अल्लाह तआला उसे भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए और उन सब बच्चों को उनकी दुआओं का वारिस बनाए।

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।

हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा

और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा

फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

पृष्ठ 12 का शेष

वक़्फ़ डॉक्टर काम किया। अल्लाह तआला ने उन की दुआओं को सुना। उन के हाथ में बहुत शिफ़ा-बख़्शी और बड़े कामयाब सर्जन के तौर पर वह घाना में काम करते रहे। फिर इस के बाद नाइजीरिया में भी काम किया।

(माख़ूज़ अज़ ख़ुतबात-ए-नासिर जिल्द 10 पृष्ठ 771-772, ख़ुत्बा-ए-निकाह 25 नवंबर 1977)

सैय्यदा लुब्ना साहिबा के बेटे सैय्यद सौद अहमद वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी हैं और आजकल फ़ज़्ल उमर हस्पताल में डिप्टी एडमिनिस्ट्रेटर हैं। वह अपनी वालिदा के हालात के बारे में कहते हैं कि जब मेरे नाना नुसरत जहाँ स्कीम के तहत ओसूकोरो घाना गए तो पूरी फ़ैमली गई थी, उन की वालिदा लुब्ना साहिबा भी साथ थीं। छोटी थीं लुब्ना साहिबा की शादी से पहले का वाक़िया है। कहते हैं उस वक़्त क्योंकि वहाँ सामान कुछ नहीं होता था तो उस वक़्त बाज़ दफ़ा पट्टियाँ काट काट कर दिया करती थीं। रौशनी नहीं होती थी। टार्च की रौशनी में डॉक्टर साहिब ऑपरेशन किया करते थे और यह बच्ची भी टार्च ले कर वहाँ खड़ी रहती थीं ताकि डॉक्टर साहिब उस रौशनी में ऑपरेशन कर सकें।

फिर यह लिखते हैं कि बहुत प्यार करने वाली थीं। अपनी तकलीफ़ भूल कर दूसरों की ख़िदमत करती थीं। अपने ख़ाविंद, वालिदैन, सास, ससुर सब के हुक़ूक़ उम्दा तौर पर अदा किए और वाक़ई अदा किए। 1986 में सीढ़ियों से गिर गई थीं। कमर की तकलीफ़ थी। फिर इस के बाद कैंसर भी हो गया। शुगर की तकलीफ़ भी थी लेकिन कभी तकलीफ़ का इज़हार नहीं किया और बड़े सब्र से अपनी बीमारी काटती रहीं और इस तरह ही चलती फिरती रहीं जिस तरह सेहत-मंद हों। अपने बच्चों को, पोतों, नवासों को भी दुआएँ सिखाती रहती थीं। ख़ास तौर पर रोज़ाना अपने पोता-पोती को जो उन के साथ रहते थे सिखातीं और ख़्याल रखतीं। नज़र भी उन की कमज़ोर हो गई थी। जब तिलावत नहीं कर सकीं तो फिर ऑनलाइन तिलावत-ए-क़ुरआन करीम सुना करती थीं। इजलासों में बाक़ायदा जाती थीं। किसी ने एक दफ़ा कहा भी कि आप बीमार हैं इजलास पर क्यों आती हैं तो उन्हों ने कहा कि इजलास हो रहा हो और मैं न जाऊँ? जमाअती निज़ाम है इस के साथ मुझे पाबंदी करनी चाहिए। जमाअत की पाबंदी का बड़ा एहसास था। क्योंकि यह मेरी पत्नी की भाभी भी थीं इस लिहाज़ से मैं ने भी देखा है कि सादा मिज़ाज और हर क़िस्म के हालात में रहने वाली और अपने आप को एडजस्ट करने वाली थीं। ससुराल का ताल्लुक़ भी उन्हों ने ख़ूब निभाया। अच्छी तरह निभाया। अल्लाह तआला उन से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उन की एक बेटी और बेटा है। बेटा वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी है जैसा कि मैं ने कहा। अल्लाह तआला उन लोगों को भी अपने माँ-बाप के नेक नक़्श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा श्रीमती नाज़ मून बीबी ज़ुबैर साहिबा का है। यह मुहम्मद शफ़ीअ ज़ुबैर साहिब जर्मनी की पत्नी हैं। पिछले दिनों में उन की वफ़ात हुई है।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

यह मॉरीशस की थीं। उन के ख़ानदान में अहमदियत उन के दादा मुहम्मद हनीफ़ सुधन साहिब के ज़रिए से आई। उन के परिजनों में एक बेटा और एक बेटी शामिल हैं। बेटे उन के अतहर ज़ुबैर साहिब हैं जो चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट जर्मनी हैं।

अतहर ज़ुबैर साहिब लिखते हैं कि आप ग़ैर-मुतज़ल्ज़िल ईमान और गहरी इन्किसार का नमूना थीं। वह कहते हैं जिस तरह उन्हों ने मुझे पाला और जो बातें हमें सिखाईं उन का ईमान बड़ा मज़बूत था। मैं इस बात को पूरे यक़ीन से कह सकता हूँ कि कभी उन को किसी क़िस्म का शिकवा और शिकायत करते हुए नहीं सुना। जब वह शदीद बीमार हुईं तो कहते हैं उस वक़्त तो ख़ास तौर पर उन के साथ रहने का मौक़ा मिला और जब भी होश में आतीं तो अपनी नमाज़ों के बारे में पूछतीं। नमाज़ों की उन को बड़ी पाबंदी थी। बे-पनाह सब्र और तहम्मुल की मालिक थीं। अल्लाह तआला के फ़ैसलों पर राज़ी होने वाली। फिर कहते हैं लोगों के काम बड़े आया करती थीं और राज़ बड़ा रखा करती थीं। एक वाक़िया है कि किसी मियाँ-बीवी का कोई मामला था। उन्हों ने मुझे कहा कि पति से पूछो कि क्या बातें हैं तो मैं ने कहा कि मुझे बताएँ कि बीवी ने क्या बातें की हैं? कहती हैं नहीं उस ने तो मुझ पर एतमाद कर के बातें बताई हैं मैं तुम्हें नहीं बताऊँगी। वह ख़ुद अगर बताना चाहेंगे तो बता देंगे तुम्हें लेकिन कोशिश करो कि आपस में उन की सुलह-सफ़ाई हो जाए।

ख़िलाफ़त से बड़ा गहरा ताल्लुक़ था और ख़ुतबात बड़े ग़ौर से सुनती थीं बल्कि उन के पोते ने लिखा है कि दो-तीन दफ़ा सुनती थीं और यह कहती थीं कि पहली दफ़ा समझ नहीं आती और अच्छी तरह न सुनो तो फिर फ़ायदा कोई नहीं। अल्लाह तआला से बड़ा पुख़्ता ताल्लुक़ था। साहिबा-ए-रूया थीं। कई उन की ख़्वाबें हैं जो सच्ची साबित हुईं। अब यही आख़िरी बीमारी के दिनों में ही ज़ुबैर साहिब लिखते हैं कि उन्हों ने कहा मुझे कैंसर तो नहीं? सीटी स्कैन हुआ तो पता लगा कि वाक़ई मसाने का कैंसर था तो उन्हों ने उन से पूछा कि आप को किस तरह पता लगा? उन्हों ने कहा मुझे अल्लाह तआला ने बता दिया है। उन की एक वफ़ात-याफ़्ता अज़ीज़ा थीं वह आई हैं उन्हों ने कहा तुम्हारा बेटा शायद तुम्हें न बताए कि तुम फ़िक्र-मंद न हो जाओ लेकिन मैं तुम्हें बताती हूँ कि तुम्हें कैंसर है। तो इस तरह अल्लाह तआला ने उन को अपनी बीमारी का भी पहले बता दिया था।

उन की बहूएँ जर्मन हैं और उन के साथ भी उन्हों ने ऐसे ही ताल्लुक़ रखा और तरबियत की है कि वह दोनों बावजूद जर्मन होने के हर मामले में उन से मशवरा लेने वाली और उन की तरह हर क़िस्म की क़ुरबानी करने वाली हैं। एक बहू उन की सूज़न ज़ुबैर कहती हैं सास की हैसियत से वह शफ़क़त और रहमदिली की रौशन मिसाल थीं। जो भी उन के पास था वह हमेशा उस पर शुक्रगुज़ार रहती थीं। बहुओं से अपनी बेटी की तरह बरताव करती थीं। बड़ा प्यार करतीं। हमारी इस्लाह भी बड़े प्यार से करतीं और हमेशा हमारे लिए दुआ भी करती थीं। दूसरी बहू हैं मारिया ज़ुबैर। वह भी कहती हैं कि जब मैं ने शादी की तो मुझे खाना पकाना और मेहमानों की मेहमान-नवाज़ी का तरीक़ा सिखाया और बग़ैर किसी दबाव या तन्क़ीद के मुझे यह बातें सिखाईं और उन्हों ने मेरी पढ़ाई के दौरान भी बड़ा काम किया। बाद में उन्हों ने, इस बहू ने मेडिसिन किया था और कहती हैं जमाअती सरगर्मियों में भी मेरा पूरा साथ दिया। मेरी और बच्चों की देख-भाल की। हमेशा हौसला दिलाया करती थीं।

अल्लाह तआला उन से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उन के बच्चों को उन की दुआओं का वारिस बनाए।

★ ★ ★

शोक संवाद तथा दुआ-ए-मग़फ़िरत

श्रीमान मंगल खान साहिब, जमाअत अहमदिया अजमेर की माता श्रीमती लाली साहिबा का 24 जून 2025 को देहांत हो गया है।

मरहूमा की मग़फ़िरत और दर्जात की बुलंदी के लिए जमाअत के लोगों से दुआ का निवेदन है।

फ़ुरकान अहमद इंस्पेक्टर बदर

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

रोमी पैलातूस दृढ़ हृदय वाला साहसी व्यक्ति न था। वह इस बात को सुनकर भयभीत हो गया कि क़ैसर (रोम का राजा) के पास उसकी शिकायत की जाएगी। एक और अन्य समानता तत्कालीन पैलातूस और इस पैलातूस में स्मरण रखने योग्य है कि तत्कालीन पैलातूस ने उस समय जब मसीह इब्ने मरयम न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, यहूदियों को कहा था कि मैं इस व्यक्ति में कोई पाप नहीं देखता। ऐसा ही जब यह आख़िरी मसीह इस आख़िरी पैलातूस के सामने प्रस्तुत हुआ और इस मसीह ने कहा कि मुझे उत्तर देने के लिए कुछ दिन की मुहलत दी जानी चाहिए कि मुझ पर क़त्ल का आरोप लगाया जाता है। तब इस आख़िरी पैलातूस ने कहा कि मैं आप पर कोई आरोप नहीं लगाता। दोनों पैलातूस के यह दोनों कथन परस्पर बिल्कुल समान हैं। यदि अन्तर है तो केवल इतना कि पहला पैलातूस अपने इस वचन पर क़ायम न रह सका और जब उसे कहा गया कि कैसर के पास तेरी शिकायत करेंगे तो वह भयभीत हो गया और हज़रत मसीह को उसने जानबूझ कर निर्दयी यहूदियों के हवाले कर दिया यद्यपि कि वह और उसकी पत्नी उनको हवाले करके शोकाकुल थे, क्योंकि वे दोनों मसीह के बहुत बड़े अनुयायी थे। परन्तु यहूदियों का अत्यधिक शोर-शराबा देख कर उस पर कायरता छा गयी। हाँ गुप्त रंग में उसने बहुत प्रयास किया कि मसीह की जान को सलीब से बचा लिया जाए। इस प्रयास में वह सफल भी हो गया परन्तु इसके पश्चात कि मसीह को सलीब पर चढ़ा दिया गया, और अत्यधिक पीड़ा से वे इतना बेहोश हो गया जैसे वह मर ही गया हो। बहरहाल रोमी पैलातूस के प्रयास से मसीह इब्ने मरयम की जान बच गई और जान बचने के लिए पहले से ही मसीह की प्रार्थना स्वीकार हो चुकी थी। देखिए इबरानिया अध्याय 5 आयत 7★

★हाशिया :- मसीह ने भविष्यवाणी के तौर पर स्वयं भी कहा कि यूनुस के निशान के अतिरिक्त और कोई निशान नहीं दिखलाया जाएगा। अतः मसीह ने अपने कथन में इस ओर संकेत दिया कि जिस प्रकार यूनुस ने जीवित ही मछली के पेट में प्रवेश किया और जीवित ही निकला। इसी प्रकार मैं भी जीवित ही क़ब्र में प्रवेश करूंगा और जीवित ही निकलूंगा अतः यह निशान इसके अतिरिक्त और कैसे पूरा हो सकता था कि मसीह जीवित ही सलीब से उतारा जाता और जीवित ही क़ब्र में प्रवेश करता। यह तो हज़रत मसीह ने कहा कि कोई और निशान नहीं दिखाया जाएगा। इस वाक्य में वास्तव में मसीह उन लोगों का रद्द करता है जो कहते हैं कि मसीह ने यह निशान भी दिखलाया कि आकाश पर चढ़ गया। इसी से।

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला के निशान देखकर मुसलमानों के दिल फ़त्ह-ए-मक्का के दिन ईमान से इतने भर रहे थे
और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान पर उनका यक़ीन इस तरह बढ़ रहा था कि
जब रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़मज़म के चश्मे से (जिसे इसमाईल अलैहिस्सलाम बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए
अल्लाह तआला ने एक निशानी के तौर पर फोड़ा था) पानी पीने के लिए मंगवाया और उसमें से कुछ पानी पीकर बाकी पानी से
आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वुज़ू फ़रमाया, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शरीर से कोई भी कतरा ज़मीन पर नहीं गिर सका।
मुसलमान फ़ौरन उसे उठा लेते और तबर्रुक के तौर पर अपने शरीर पर मल लेते थे, और मुशरिक कह रहे थे: "हमने दुनिया में कोई ऐसा बादशाह नहीं देखा जिसके साथ उसके लोगों को इतनी मुहब्बत हो।"
फ़त्ह-ए-मक्का के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाहुम्मा इन्नल-'ऐशा 'ऐशुल-आख़िरह" कि "ऐ अल्लाह! निस्संदेह असली ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी है।"
फ़त्ह-ए-मक्का के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में कमान थी। जब भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी बुत के पास से गुज़रते, तो उसके साथ बुत की आँख में मारते और फ़रमाते:
"जाअल-हक़्क़ु व ज़हक़ल-बातिल, इन्नल-बातिला काना ज़हूक़ा" कि "हक़ आ गया और बातिल भाग गया। निस्संदेह बातिल भागने वाला ही है।"
एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुफ़्फ़ार-ए-मक्का से फ़रमाया:
"अक़ूलु कमा काला यूसुफ़: ला तसरीबा अलैकुमुल-यौम, यग्फिरुल्लाहु लकुम व हुवा अरहमुर-राहिमीन।"
"मैं वही कहूँगा जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा था: 'आज के दिन तुम पर कोई मलामत नहीं। अल्लाह तुम्हें माफ़ कर देगा, और वह सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है।'"
लोग आम माफ़ी का एलान सुनकर इस तरह निकले, जैसे अभी-अभी क़ब्रों से निकले हों, और इस्लाम में दाख़िल हो गए।
श्रीमती सैय्यदा लुब्ना अहमद साहिबा, पत्नी सैय्यद मौलूद अहमद साहिब, और श्रीमती नाज़मून बीबी ज़ुबैर साहिबा, पत्नी मुहम्मद शफ़ी' ज़ुबैर साहिब (जर्मनी) का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ाइब।
ग़ज़वा-ए-फ़त्ह-ए-मक्का के तनाज़ुर में सीरत-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पुर-मआरिफ़ बयान।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 04 जुलाई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले खुत्बे में फ़त्ह-ए-मक्का के दौरान मक्का में दाख़िल होने के हालात का वर्णन हुआ था। इसकी और तफ़सील इस तरह है। इब्ने इशाक़ ने लिखा है कि जब अबू सुफ़ियान अल्लाह तआला के लश्करों का जो उसके पास से गुज़रे थे मुशाहिदा करके मक्का पहुँचा और उस वक़्त मुसलमान ज़ी-तुआ पहुँच चुके थे जो मस्जिद-ए-हराम से आधा मील के फ़ासिले पर मक्का की एक वादी है और सहाबा वहाँ पहुँच कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंतेज़ार करने लगे यहाँ तक कि सारे सहाबा वहीं जमा हो गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सब्ज़पोश दस्ते के साथ आए। इब्ने सअद ने लिखा है कि आप अपनी ऊँटनी क़सवा पर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु के दरमियान थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा। फ़त्ह-ए-मक्का के दिन आप अपनी ऊँटनी पर थे और आप सूरह-ए-फ़त्ह पढ़ रहे थे। यह रिवायत बुख़ारी में है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का श्रीमती में दाख़िल हुए तो लोग आपकी ज़ियारत के लिए आए। इन्किसार की वजह से आपका सर कजावे को छू रहा था। यानी जो ऊँट की सीट थी, जहाँ बैठे हुए थे उसके अगले हिस्से को छू रहा था। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का श्रीमती में दाख़िल हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सियाह रंग का इमामा बाँध रखा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा भी सियाह था और परचम भी सियाह था। बाज़ रिवायात के मुताबिक़ छोटा झंडा यानी लिवा सफ़ेद रंग का था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ी-तुआ जगह पर खड़े हुए। आप लोगों के दरमियान थे। फ़त्ह और मुसलमानों की कसरत देख कर आपकी रेश मुबारक इन्किसार की वजह से कजावे को छू रही थी या क़रीब था कि वह छू ले।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाहुम्मा इन्नल-'ऐशा 'ऐशुल-आख़िरह" कि "ऐ अल्लाह! यक़ीनन असली ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी है।"

अदल व इन्साफ़ और इन्किसार व तवाज़ु का एक और पहलू यह था कि आप ने अपने पीछे अपने आज़ाद किए हुए गुलाम ज़ैद बिन हारिसा के बेटे उसामा को सवार फ़रमाया हुआ था हालाँकि क़ुरैश के रुअसा और बनू हाशिम के बेटे भी मौजूद थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीस रमज़ानुल मुबारक को मक्का में दाख़िल हुए। इस वक़्त सूरज कुछ बुलंद हो चुका था।

(सबुलुल हुदा जिल्द 5 पृष्ठ 226, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)(सहीहुल बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ऐन रकज़न नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमुर राय्या यौमल फ़त्ह हदीस: 4281)(फ़रहंग-ए-सीरत पृष्ठ नंबर 180, ज़वार अकादमी कराची)(अत-तबक़ातुल कुबरा जिल्द 2 पृष्ठ 103-104, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)(इम्ताउल अस्मा जिल्द 8 पृष्ठ 384, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)(तारीख़ुल ख़मीस जिल्द 2 पृष्ठ 84, 77, मकतबतुश शामिला)(अस-सीरतुल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 122, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)(सुननुत तिर्मिज़ी अबवाबुल जिहाद बाब मा जाअ फ़िल लिवा हदीस: 1679)(माख़ूज़ अज़ ज़रकानी जिल्द 3 पृष्ठ 414, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फ़रमाते हैं कि "यह उलूव्व जो अल्लाह तआला के ख़ास बंदों को दिया जाता है वह इन्किसार के रंग में होता है और शैतान का उलूव्व इस्तकबार से मिला हुआ था। देखो! हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मक्का को फ़त्ह किया तो आप ने उसी तरह अपना सर झुकाया और सजदा किया जिस तरह उन मसाइब और मुश्किलात के दिनों में झुकाते और सजदे करते थे जब उसी मक्का में आप की हर तरह से मुख़ालेफ़त की जाती और दुख दिया जाता था। जब आप ने देखा कि मैं किस हालत में यहाँ से गया था और किस हालत में अब आया हूँ तो आप का दिल अल्लाह के शुक्र से भर गया और आप ने सजदा किया।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 3 हाशिया पृष्ठ 260, एडिशन 2022)

इस बारे में कि फ़त्ह-ए-मक्का के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़याम कहाँ हुआ था? लिखा है कि मक्का के क़रीब पहुँच कर जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया गया कि मक्का में क़याम कहाँ होगा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या अक़ील ने कोई घर हमारे लिए छोड़ा भी है! अक़ील हज़रत अबू तालिब के बेटे थे और यह हुदैबिया से कुछ पहले इस्लाम लाए थे और कहा जाता है कि उन्होंने इस से पहले सारी जायदाद वग़ैरा फ़रोख़्त कर दी थी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमारा क़याम ख़ैफ़ बनी किनाना में होगा जहाँ क़ुरैश ने कुफ़्र पर क़समें खाई थीं। और तमाम सहाबा को हुक्म हुआ कि वहीं जमा हों। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उस दिन मैं उन लोगों में से था जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साथ थे। फ़त्ह-ए-मक्का के दिन मैं आप के साथ ही दाख़िल हुआ और जब मक्का के घर देखे तो आप रुक गए। आप ने अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने ख़ैमे की जगह को देखा और फ़रमाया ऐ जाबिर! यह हमारे क़याम की जगह है। इसी जगह क़ुरैश ने हमारे ख़िलाफ़ कुफ़्र की हालत में क़समें खाई थीं। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं इस पर मुझे वह बात याद आ गई जिसे मैंने मदीना में आप से सुन था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि जब

हम मक्का फ़त्ह करेंगे तो हमारा क़याम ख़ैफ़ बनी किनाना में होगा जहाँ कुफ़्र की हालत में उन्होंने क़समें खाई थीं कि वह बनू हाशिम से ख़रीद-फ़रोख़्त नहीं करेंगे और न उनसे निकाह करेंगे और न उन्हें पनाह देंगे और उन्हें एक घाटी शिब-ए-अबी तालिब में महसूर रहने पर मजबूर कर दिया था।

उलमा के नज़दीक नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुज़ूर इज़्हार-ए-तशक्कुर के तौर पर अब यहाँ क़याम करने का फ़ैसला फ़रमाया होगा। क्योंकि यह बाज़ का ख़्याल है। बाज़ रिवायात के मुताबिक़ आप से अर्ज़ किया गया कि आप मक्का में अपने घर के अलावा किसी और घर क़याम फ़रमा लें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन्कार कर दिया। आप ने फ़रमाया मैं दूसरे घरों में दाख़िल नहीं होंगा। हज़रत अबू राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हु ने हजून के मुक़ाम पर आप का ख़ैमा लगाया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह आप की अज़्वाज में से हज़रत उम्मे सलमा और मैमूना थीं। आप हर नमाज़ के लिए हजून से मस्जिद-ए-हराम में तशरीफ़ लाते थे।

(माख़ूज़ अज़ सबुलुल हुदा जिल्द 5 पृष्ठ 230-231, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)(फ़त्हुल बारी जिल्द 8 पृष्ठ 17-18, आराम बाग़ कराची)(असदुल ग़ाबा जिल्द 4 पृष्ठ 61, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)(दाइरा मआरिफ जिल्द 9 पृष्ठ 99-100, बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर)(अल-लुलुल मक्नून, जिल्द 4 पृष्ठ 49, दारुस समीई लिन्नश्र वत तौज़ी)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तारीख़ की किताबों से लेकर बयान करते हैं कि "जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में दाख़िल हुए आप से लोगों ने पूछा या रसूलुल्लाह! क्या आप अपने घर में ठहरेंगे? आप ने फ़रमाया क्या अक़ील ने (यह आप के चचा जाद भाई थे) हमारे लिए कोई घर छोड़ा भी है? यानी मेरी हिज्रत के बाद मेरे रिश्तेदारों ने मेरी सारी जायदाद बेच-बाच कर खा ली है। अब मक्का में मेरे लिए कोई ठिकाना नहीं। फिर आप ने फ़रमाया हम ख़ैफ़ बनी किनाना में ठहरेंगे। यह मक्का का एक मैदान था जहाँ क़ुरैश और किनाना क़बीले ने मिल कर क़समें खाई थीं कि जब तक बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पकड़ कर हमारे हवाले न कर दें और उनका साथ न छोड़ दें हम उनसे न शादी-ब्याह करेंगे न ख़रीद-फ़रोख़्त करेंगे। इस अहद के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के चचा अबू तालिब और आप की जमाअत के तमाम अफ़राद वादी-ए-अबी तालिब में पनाह-गुज़ीन हुए थे और तीन साल की शदीद तकलीफ़ों के बाद अल्लाह तआला ने उन्हें नजात दिलाई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इंतख़ाब कैसा लतीफ़ था। मक्का वालों ने इसी मुक़ाम पर क़समें खाई थीं कि जब तक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे सुपुर्द न कर दिए जाएँ हम आप के क़बीले से सुलह नहीं करेंगे। आज मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसी मैदान में जा कर उतरे और गोया मक्का वालों से कहा कि जहाँ तुम चाहते थे मैं वहाँ आ गया हूँ मगर बताओ तो सही क्या तुम में ताक़त है कि आज मुझे अपने ज़ुल्मों का निशाना बना सको!! वही मुक़ाम जहाँ तुम मुझे ज़लील और मक़्हूर शक्ल देखना चाहते थे और ख़्वाहिश रखते थे कि मेरी क़ौम मुझे पकड़ कर इस जगह तुम्हारे सुपुर्द कर दे वहाँ मैं ऐसी शक्ल में आया हूँ कि मेरी क़ौम ही नहीं सारा अरब भी मेरे साथ है और मेरी क़ौम ने मुझे तुम्हारे सुपुर्द नहीं किया बल्कि मेरी क़ौम ने तुम्हें मेरे सुपुर्द कर दिया है। अल्लाह तआला की क़ुदरत है कि यह दिन भी पीर का दिन था। वही दिन जिस दिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ार-ए-सौर से निकल कर सिर्फ़ अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की मुआसिरत में मदीना की तरफ़ हिज्रत कर गए थे। वही दिन जिस में आप ने हसरत के साथ सौर की पहाड़ी से मक्का की तरफ़ देख कर कहा था। ऐ मक्का! तू मुझे दुनिया की सारी बस्तियों से ज़्यादा प्यारा है लेकिन तेरे बाशिंदे मुझे इस जगह पर रहने नहीं देते।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन - अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 344-345)
(दीबाजा तफ़्सीरुल क़ुरआन पृष्ठ 215, एडिशन औल)

हज़रत उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के बालाई हिस्से में पड़ाव फ़रमाया तो बनू मख़ज़ूम में से मेरे दो ससुराली रिश्तेदार भाग कर मेरे पास आ गए। मेरा भाई हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास आया और उसने कहा अल्लाह की क़सम! मैं इन दोनों को क़त्ल कर दूँगा। मैंने इन दोनों के लिए अपने घर का दरवाज़ा बंद कर दिया। फिर मैं ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मक्का के बालाई हिस्से में आई। मैंने आप को पानी के एक बर्तन में से ग़ुस्ल करते पाया जिस में गूँधे हुए आटे के निशान मौजूद थे और आप की बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा एक कपड़े के साथ आप के लिए पर्दा किए हुए थीं। ग़ुस्ल के बाद आप ने अपने कपड़े तब्दील किए। फिर चाश्त के वक़्त आठ रकअत नमाज़ अदा की। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया ऐ उम्मे हानी! ख़ुश आमदीद। तुम्हारा कैसे आना हुआ? उन्होंने इन दोनों आदमियों और हज़रत अली के मुतअल्लिक़ सारा मामला बताया कि इस तरह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उन को क़त्ल करना चाहते थे और मैं उन को अपने घर में छिपा कर आई हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिन को तुम ने पनाह दी उन्हें हम ने पनाह दी और जिन को तुम ने अमान दी उन को हम ने अमान दी। पस वह इन दोनों को क़त्ल न करे यानी रसूल-ए-पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उन को क़त्ल नहीं करेंगे यह दो अफ़राद हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा के ससुराली रिश्तेदार हारिस बिन हिशाम और अब्दुल्लाह बिन रबीआ थे।

(अस-सीरतुन नबविया लिइब्ने हिशाम पृष्ठ 743-744, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)(माख़ूज़ सहीह बुख़ारी किताबुस सलात बाबुस सलात फ़िल सौबिल वाहिद मुलतहिफ़न बिही हदीस 357)(सबुलुल हुदा वर रशाद जिल्द 5 पृष्ठ 249-250, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

बुख़ारी की एक रिवायत में है कि अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला बयान करते हैं। हमसे किसी ने बयान नहीं किया कि उसने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चाश्त की नमाज़ पढ़ते हुए देखा सिवाय उम्मे हानी के। यानी सिर्फ़ यह रिवायत उम्मे हानी की है कि आप चाश्त की नमाज़ पढ़ रहे थे और इसका कोई और गवाह नहीं मिला। हज़रत उम्मे हानी बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़त्ह-ए-मक्का के दिन उनके घर में तशरीफ़ लाए और आप ने ग़ुस्ल किया और आठ रकअत नमाज़ पढ़ी। मैंने इससे ज़्यादा हल्की नमाज़ कभी नहीं देखी मगर आप पूरी तरह रुकू और सजदा करते थे। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सहीहुल बुख़ारी अबवाबुत ततव्वु बाब सलातुज़ ज़ुहा फ़िस सफ़र हदीस 1176)

आठ रकअत नमाज़ जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अदा फ़रमाई। इसके बारे में उलमा ने मुख़्तलिफ़ आरा का इज़्हार किया है कि यह कौन सी नमाज़ थी? बाज़ ने कहा कि यह चाश्त थी या इशराक़। किसी ने इस नमाज़ को इशराक़ कहा है और किसी ने कहा कि चाश्त की नमाज़ थी। बाज़ के नज़दीक यह नमाज़, नमाज़-ए-फ़त्ह थी जो किसी शहर या क़िला वग़ैरा फ़त्ह करने के बाद शुक्राने के तौर पर पढ़ी गई और इसी सुन्नत के तौर पर बाद में उमराए इस्लाम ने फ़तूहात के बाद आठ रकअत नमाज़ अदा करनी शुरू की थी।

(अल-लुलुल मक्नून, जिल्द 4 पृष्ठ 52, दारुस समीई लिन्नश्र वत तौज़ी)

एक राय यह भी है कि फ़त्ह-ए-मक्का की रात चूँकि बाज़ इंतिहाई अहम उमूर पेश नज़र थे जिस की वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतने मसरूफ़ रहे कि तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने का वक़्त नहीं मिला जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वक़्त अदा की यानी सुबह के वक़्त। और शायद इसी वजह से एक मसअला यह है कि अगर किसी वजह से तहज्जुद की नमाज़ रह जाए तो सुबह सूरज निकलने के बाद आठ रकअत नमाज़ पढ़ लेनी चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि "रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है अगर तुम किसी दिन तहज्जुद न पढ़ सको तो इशराक़ ही पढ़ लो।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद जिल्द 22 पृष्ठ 477, ख़ुत्बा जुमा फ़रमूदा 19 सितंबर 1941)

यह भी बाज़ रिवायात में मिलता है कि अगर कभी न पढ़ सके हों तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस तरह तहज्जुद की नमाज़ की जगह इशराक़ पढ़ लिया करते थे।

मीर अब्बास अली साहिब लुधियानवी के नाम एक मकतूब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं कि "इस आजिज़ ने पहले लिख दिया था कि आप अपने तमाम औराद-ए-मामूला को" यानी जो वर्द आप करते हैं मामूल में "बदस्तूर लाज़िम औक़ात रखें। सिर्फ़ ऐसे तरीक़ों से परहेज़ चाहिए जिन में किसी नौ का शिर्क या बिदअत हो।" इस से परहेज़ करें। "पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशराक़ पर मुदाविमत साबित नहीं।" यह नहीं साबित होता कि आप बाक़ायदा इशराक़ पढ़ा करते थे। "तहज्जुद के फ़ौत होने पर या सफ़र से वापस आ कर पढ़ना साबित है लेकिन तअब्बुद में कोशिश करना और करीम के दरवाज़े पर पड़े रहना ऐन सुन्नत है।" (मकतूबात-ए-अहमद जिल्द औल पृष्ठ 528 मकतूब नंबर 15) यानी इबादत और बंदगी को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए और अल्लाह तआला के दरवाज़े पर पड़े रहना यही तो अस्ल सुन्नत है।

मस्जिद-ए-हराम में दाख़िले का और तवाफ़ का ज़िक्र

मिलता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दिन का कुछ हिस्सा अपने ख़ैमे में तशरीफ़ फ़रमा रहे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ऊँटनी क़सवा को मंगवाया। उसे आप के ख़ैमे के दरवाज़े के क़रीब कर दिया गया। आप हथियार लेने और सर पर ख़ुद पहनने के लिए चले गए। सहाबा आप के इर्द-गिर्द हल्क़ा बनाए हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी सवारी पर सवार हुए। ख़ंदमा से ले कर हजून तक घोड़ों की बल खाती क़तार थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहाँ से गुज़रे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु थे। आप उनके साथ बातें कर रहे थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़त्ह-ए-मक्का के मौक़े पर कदा पहाड़ की जानिब मक्का में दाख़िल हुए तो आप ने देखा कि औरतें घोड़ों के मुँह पर अपने दुपट्टे मार मार कर उन को पीछे हटा रही थीं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्कुराते हुए हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ देखा और फ़रमाया ऐ अबू बक्र! हस्सान बिन साबित ने क्या कहा है? यानी

हस्सान बिन साबित ने कोई शेर कहे थे। उन के बारे में पूछा। चुनाँचे हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह अशआर पढ़े जिन का तर्जुमा यह है कि मैं अपनी प्यारी बेटी को खो दूँ अगर तुम ऐसे लश्करों को गुबार उड़ाते हुए न देखो जिन के वादों की जगह कदा पहाड़ है। वह तेज़ रफ़्तार घोड़े अपनी लगामों को खींच रहे हैं। औरतें उन्हें अपनी ओढ़नियों से मार रही हैं। यह नक़्शा खींचा उन्हों ने घोड़ों का और वही इस वक़्त वहाँ वाक़िया हो रहा था।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फ़त्ह-ए-मक्का के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का श्रीमती में दाख़िल हुए तो ख़ाना-ए-काबा के इर्द-गिर्द तीन सौ साठ बुत नस्ब थे जिन्हें सीसे के साथ लगाया गया था। हुबल सब से बड़ा बुत था। यह ख़ाना-ए-काबा के सामने था। इसाफ़ और नाइला उस जगह थे जहाँ लोग अपने जानवर ज़ब्ह करते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में कमान थी। आप ने कमान को किनारे से पकड़ा।

जब भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी बुत के पास से गुज़रते तो उस के साथ बुत की आँख में मारते और फ़रमाते। "जाअल हक़्क़ु व ज़हक़ल बातिल, इन्नल बातिला काना ज़हूक़ा" (सूरह बनी इसराईल:8) कि हक़ आ गया और बातिल भाग गया। यक़ीनन बातिल भाग जाने वाला ही है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ाना-ए-काबा के पास पहुँच गए और उसे देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी सवारी पर आगे बढ़े और अपने असा के साथ हजर-ए-असवद को छुआ और अल्लाहु अकबर! कहा। मुसलमानों ने भी जवाबन तकबीर कही। वह बार-बार नारा-ए-तकबीर बुलंद करते रहे यहाँ तक कि मक्का अल्लाहु अकबर! के नारों से गूँज उठा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें ख़ामोश हो जाने का इशारा किया। पहाड़ों पर मुशरिकीन यह मंज़र देख रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा ऊँटनी की नकेल पकड़े हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हजर-ए-असवद के पास आए और उसे छुआ और बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। जब आप ने तवाफ़ मुकम्मल कर लिया तो अपनी सवारी से नीचे उतर आए। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हम ने मस्जिद में ऊँटनी को बिठाने की जगह न पाई तो आप लोगों की हथेलियों पर उतरे यानी लोगों ने अपने हाथ आगे किए। आप उस पर खड़े खड़े ऊँट से नीचे उतर गए। ऊँटनी को बाहर ले जाया गया। हज़रत मआमर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु आए और ऊँटनी को ले कर वादी में चले गए।

एक रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़त्ह-ए-मक्का के वक़्त हुक्म दिया कि जब वह बतहा में थे कि वह ख़ाना-ए-काबा के अंदर जाएँ और उस में मौजूद हर तस्वीर को मिटा दें जब तक उस में मौजूद हर तस्वीर मिटा नहीं दी गई नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस में दाख़िल नहीं हुए।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की तस्वीरें भी निकाली गईं। इन दोनों के हाथों में फाल निकालने वाले तीर थे। उन की भी वहाँ तस्वीरें बनाई गई थीं या बुत बनाए गए थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन तस्वीरों को देखा तो फ़रमाया: "अल्लाह इन बुत-परस्तों को हलाक करे। इन बुत-परस्तों को इल्म है कि यह जो हाथ में पकड़ाए हुए तीर हैं, इन दोनों ने यानी हज़रत इब्राहीम और इस्माईल अलैहिस्सलाम ने उन के ज़रिए से कभी फाल नहीं निकाली। यह झूठी कहानी बनाई हुई है। कभी उन्हों ने ऐसा नहीं किया।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मकाम-ए-इब्राहीम पर आए, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़िरह पहन रखी थी। आप ने वहाँ दो रकअतें अदा कीं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़म-ज़म के पास तशरीफ़ ले गए। हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब या हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब ने एक डोल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए निकाला। आप ने उस से पानी पिया और वुज़ू किया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम जल्दी जल्दी आप के वुज़ू का पानी हासिल करने लगे और उसे अपने चेहरों पर डालने लगे। मुशरिकीन उन की तरफ़ देख रहे थे, वह मुतअज्जिब थे और कह रहे थे कि हम ने इतने बड़े बादशाह के बारे में न सुना है न देखा है। मक्का फ़त्ह करने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुबल बुत के बारे में हुक्म दिया। चुनाँचे वह गिरा दिया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के पास खड़े थे। इस पर हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम ने अबू सुफ़ियान से कहा ऐ अबू सुफ़ियान! हुबल को गिरा दिया गया हालाँकि तू ग़ज़वा-ए-उहुद के दिन उस के मुतअल्लिक़ बहुत ग़ुरूर में था जब तू ने एलान किया था कि उस ने तुम लोगों पर इनाम किया है यानी हुबल ने इनाम किया है। इस पर

अबू सुफ़ियान ने कहा ऐ अव्वाम के बेटे! इन बातों को अब जाने दो क्योंकि मैं जान चुका हूँ कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुदा के अलावा भी कोई ख़ुदा होता तो जो आज हुआ वह न होता।

इस के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ाना-ए-काबा के एक कोने में बैठ गए और लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इर्द-गिर्द जमा थे।

(सुनन अबू दाऊद किताबुल लिबास बाब फ़िस सुवर हदीस: 4156) (फ़त्ह-ए-मक्का अज़ बाशमील पृष्ठ 270-271, नफ़ीस अकादमी कराची)(सबुलुल हुदा जिल्द 5 पृष्ठ 227, 234-235, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)(सहीह बुख़ारी मुतर्जिम किताबुल मग़ाजी हदीस: 4288)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़त्ह-ए-मक्का के दिन तशरीफ़ फ़रमा थे और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार सोंटे आप की हिफ़ाज़त के लिए आप के सिरहाने खड़े थे।

(मजमउज़ ज़वाइद जिल्द 6 पृष्ठ 187 रिवायत 10252, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़त्ह-ए-मक्का के साल उसामा बिन ज़ैद की ऊँटनी पर आए फिर उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु बिन तल्हा को बुलाया और फ़रमाया: "मेरे पास चाबी लाओ।" वह अपनी वालिदा के पास गए तो उस ने उन्हें ख़ाना-ए-काबा की चाबी देने से इन्कार किया। उन्हों ने कहा "अल्लाह की क़सम! तुम्हें ज़रूर यह चाबी देनी होगी। अपनी वालिदा को यह कहा या फिर यह तलवार मेरी पीठ से पार होगी।" यानी फिर उस के लिए मुझ पर सख़्ती होगी और वह सख़्ती तुम्हारे पे भी होगी और आख़िरकार देनी पड़ेगी। रावी कहते हैं तब उस ने उन्हें चाबी दे दी। वह उसे ले कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप को दे दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चाबी उन्हें वापस कर दी और उन्हों ने दरवाज़ा खोला।

(सहीह मुस्लिम (मुतर्जिम) किताबुल हज्ज बाब इस्तिहाब-ए-दुख़ूलिल काबा लिल हाज्ज जिल्द 6 पृष्ठ 278 हदीस 2345)

आँहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसामा बिन ज़ैद और बिलाल बिन रबाह को साथ ले कर ख़ाना-ए-काबा के अंदर तशरीफ़ ले गए। काबा का कुलीद-बरदार उस्मान बिन तल्हा भी साथ था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काबा का दरवाज़ा बंद कर दिया और दीर तक उस के अंदर रहे और दो रकअत नमाज़ वहाँ अदा की। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो कि बाहर दरवाज़े के पास ही खड़े थे वह बयान करते हैं कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं जल्दी से अंदर गया और मैं ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या किया था यहाँ जब आए थे? उन्हों ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सतून को अपने बाईं तरफ़ और एक सतून को दाईं तरफ़ और तीन सतूनों को अपने पीछे रखा। बैतुल्लाह में उस वक़्त छह सतून थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस तरह नमाज़ पढ़ी कि दो सतूनों के दरमियान खड़े हो गए।

आगे जो पहले सतून थे और पीछे तीन सतून थे। एक रिवायत के मुताबिक़ आप ने दो सतून अपने बाईं और एक सतून अपने दाईं और तीन सतून पीछे रखे। यानी जो पहले अगले सतून थे उन में से इस तरह तक़सीम किया कि दो एक तरफ़ हो गए एक एक तरफ़ और पीछे तीन सतून थे। बहरहाल आप ने वहाँ दो रकअत नमाज़ अदा की। सहीह मुस्लिम की यह रिवायत है।

(सहीह बुख़ारी किताबुस सलात बाबुस सलात बैनस सवारी फ़ी ग़ैरि जमाअत हदीस: 504, 505)(सहीह मुस्लिम (मुतर्जिम) किताबुल हज्ज बाब इस्तिहाब-ए-दुख़ूलिल काबा लिल हाज्ज जिल्द 6 पृष्ठ 276 हदीस 2344)(अल-लुलुल मक्नून जिल्द 4 पृष्ठ 58-59, दारुस समीई लिन्नश्र वत तौज़ी)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "मक्का में दाख़िल होते वक़्त हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आप की ऊँटनी की रकाब पकड़े हुए आप के साथ बातें भी करते जा रहे थे और सूरह-ए-फ़त्ह जिस में फ़त्ह-ए-मक्का की ख़बर दी गई थी वह भी पढ़ते जाते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सीधे ख़ाना-ए-काबा की तरफ़ आए और ऊँटनी पर चढ़े चढ़े सात दफ़ा ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ किया। उस वक़्त आप के हाथ में एक छड़ी थी। आप ख़ाना-ए-काबा के गिर्द जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उन के बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम ने ख़ुदाई वाहिद की परस्तिश के लिए बनाया था जिसे बाद को उन की गुमराह औलाद ने बुतों का मख़ज़न बना कर रख दिया था घूमे और वह तीन सौ साठ बुत जो उस जगह पर रखे हुए थे उन में से एक एक बुत पर आप छड़ी मारते जाते थे और यह कहते जाते थे। 'जाअल हक़्क़ु व ज़हक़ल बातिल, इन्नल बातिला काना ज़हूक़ा'। यह वह आयत है जो हिज्रत से पहले सूरह-ए-बनी इसराईल में आप पर नाज़िल हुई थी और जिस में हिज्रत और फिर फ़त्ह-ए-मक्का की ख़बर दी गई थी। यूरोपी मुसन्निफ़ीन इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि यह हिज्रत से पहले की सूरह है। इस सूरह में यह बयान किया गया था कि 'व कुल रब्बि अदख़िल्नी मुदख़ला सिद्क़िन व अख़रिज्नी मुख़रजा सिद्क़िन वजअल ली मिन लदुन्का सुल्तानन नसीरा। व कुल जाअल हक़्क़ु व ज़हक़ल बातिल, इन्नल बातिला काना ज़हूक़ा' (बनी इसराईल: 81) यानी तू कह दे मेरे रब! मुझे इस शहर यानी मक्का में नीक तौर पर दाख़िल कीजीयो यानी हिज्रत के बाद फ़त्ह और ग़लबा दे कर। और इस शहर से ख़ैरियत से ही निकालीयो यानी हिज्रत के वक़्त। और ख़ुद अपने पास से मुझे ग़लबा और मदद के सामान भिजवाईयो। और यह भी कहो कि हक़ आ गया है और बातिल यानी शिर्क शिकस्त खा के भाग गया है और बातिल यानी शिर्क के लिए शिकस्त खा कर भागना तो हमेशा के लिए मुक़द्दर था। इस पेशगोई के लफ़्ज़न लफ़्ज़न पूरा होने और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के इस को तिलावत करते वक़्त मुसलमानों और कुफ़्फ़ार के दिलों में जो जज़्बात पैदा हुए होंगे वह लफ़्ज़ों में अदा नहीं हो सकते। ग़रज़ उस दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मुक़ाम फिर ख़ुदाई वाहिद की

इबादत के लिए मख़सूस कर दिया गया और बुत हमेशा के लिए तोड़े गए। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुबल नामी बुत के ऊपर अपनी छड़ी मारी और वह अपने मुक़ाम से गिर कर टूट गया तो हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबू सुफ़ियान की तरफ़ मुस्कुराते हुए देखा और कहा अबू सुफ़ियान! याद है उहुद के दिन जब मुसलमान ज़ख़्मों से चूर एक तरफ़ खड़े हुए थे तुम ने अपने ग़ुरूर में यह एलान किया था 'उ'लु हुबल। उ'लु हुबल। हुबल की शान बुलंद हो। हुबल की शान बुलंद हो।' और यह कि हुबल ने ही तुम को उहुद के दिन मुसलमानों पर फ़त्ह दी थी। आज देखते हो वह सामने हुबल के टुकड़े पड़े हैं। अबू सुफ़ियान ने कहा ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु! यह बातें जाने दो। आज हम को अच्छी तरह नज़र आ रहा है कि अगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुदा के सिवा कोई और ख़ुदा भी होता तो आज जो कुछ हम देख रहे हैं इस तरह कभी न होता। फिर आप ने ख़ाना-ए-काबा के अंदर जो तस्वीरें हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम वग़ैरह की बनी हुई थीं उन के मिटाने का हुक्म दिया और ख़ाना-ए-काबा में ख़ुदा तआला के वादों के पूरा होने के शुक्रिया में दो रकअत नमाज़ पढ़ी। फिर बाहर तशरीफ़ लाए और बाहर आ कर भी दो रकअत नमाज़ पढ़ी। ख़ाना-ए-काबा की तस्वीरों को मिटाने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मुक़र्रर फ़रमाया था। उन्हों ने इस ख़्याल से कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को तो हम भी नबी मानते हैं हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तस्वीर को न मिटाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब इस तस्वीर को क़ाएम देखा तो फ़रमाया उमर! तुम ने यह क्या किया? क्या ख़ुदा ने यह नहीं फ़रमाया कि 'मा कान इब्राहीम यहूदिय्या व ला नसरानिय्या व लाकिन कान हनीफ़न मुस्लिमा व मा कान मिनल मुश्रिकीन' (आले इमरान: 68) यानी इब्राहीम न यहूदी थे न नसरानी बल्कि वह ख़ुदा तआला का कामिल फ़रमांबरदार और ख़ुदा तआला की सारी सदाक़तों को मानने वाला और ख़ुदा का मुवह्हिद बंदा था। चुनाँचे आप के हुक्म से यह तस्वीर भी मिटा दी गई।

ख़ुदा तआला के निशान देख कर मुसलमानों के दिल उस दिन ईमान से इतने पुर हो रहे थे और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान पर उन का यक़ीन इस तरह बढ़ रहा था कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब ज़म-ज़म के चश्मे से (जो इस्माईल अलैहिस्सलाम बिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए ख़ुदा तआला ने बतौर निशान फाड़ा था) पानी पीने के लिए मंगवाया और उस में से कुछ पानी पी के बाक़ी पानी से आप ने वुज़ू फ़रमाया तो आप के जिस्म में से कोई क़तरा ज़मीन पर नहीं गिर सका। मुसलमान फ़ौरन उस को उचक ले जाते और तबर्रुक के तौर पर अपने जिस्म पर मल लेते थे और मुशरिक कह रहे थे हम ने कोई बादशाह दुनिया में ऐसा नहीं देखा जिस के साथ उस के लोगों को इतनी मुहब्बत हो।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल कुरआन - अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 345 से 347)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "यह बात बहुज़ूर-ए-दिल याद रखो कि जैसे बैतुल्लाह में हजर-ए-असवद पड़ा हुआ है। उसी तरह क़ल्ब सीने में पड़ा हुआ है।" मिसाल दे रहे हैं आप हजर-ए-असवद की इंसान के दिल से जो हमारे सीने में है। फ़रमाया कि "बैतुल्लाह पर भी एक ज़माना आया हुआ था कि कुफ़्फ़ार ने वहाँ बुत रख दिए थे। मुमकिन था कि बैतुल्लाह पर यह ज़माना न आता। मगर नहीं ख़ुदा तआला ने उस को एक नज़ीर के तौर पर रखा। क़ल्ब-ए-इंसानी भी हजर-ए-असवद की तरह है और उस का सीना बैतुल्लाह से मुशाबहत रखता है। मासिवा ख़ुदा के ख़्यालात वह बुत हैं जो इस काबा में रखे गए हैं।" यानी दिल में जो भी ख़्यालात ख़ुदा के सिवा आते हैं वह सारे बुत हैं। "मक्का मुअज़्ज़मा के बुतों का क़लअ व क़म उस वक़्त हुआ था जब कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस हज़ार क़ुदसियों की जमाअत के साथ वहाँ जा पड़े थे और मक्का फ़त्ह हो गया था। उन दस हज़ार सहाबा को पहली किताबों में मलाइका लिखा है और हक़ीक़त में उन की शान मलाइका ही की सी थी। इंसानी क़ुव्वा भी एक तरह पर मलाइका ही का दर्जा रखते हैं क्योंकि जैसे मलाइका की यह शान है कि 'यफ़अलूना मा यू'मरून' (अन-नहल:51)

उसी तरह पर इंसानी क़ुव्वा का ख़ासा है कि जो हुक्म उन को दिया जाए उस की तामील करते हैं। ऐसा ही तमाम क़ुव्वा और जवारिह हुक्म-ए-इंसानी के नीचे हैं। पस मासवा ख़ुदा के बुतों की शिकस्त और इस्तीसाल के लिए ज़रूरी है कि उन पर उसी तरह से चढ़ाई की जाए। यह लश्कर तज़किया-ए-नफ़्स से तैयार होता है और उसी को फ़त्ह दी जाती है जो तज़किया करता है। चुनाँचे क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है। 'क़द अफ़लह मन ज़क्काहा' (अश-शम्स:10) हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर क़ल्ब की इस्लाह हो जाए तो कुल जिस्म की इस्लाह हो जाती है। और यह कैसी सच्ची बात है आँख, कान, हाथ, पाँव, ज़बान वग़ैरह जिस क़द्र अ'ज़ा हैं वह दरअस्ल क़ल्ब के ही फ़तवे पर अमल करते हैं। एक ख़्याल आता है फिर वह जिस अ'ज़ा के मुतअल्लिक़ हो वह फ़ौरन उस की तामील के लिए तैयार हो जाता है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 172-173, एडिशन 2022)

आप (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) ने इस तरह यह मिसाल फ़रमाई कि अपने दिलों के बुतों को भी दूर करो तभी तुम हक़ीक़ी मोमिन बन सकते हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वहाँ ख़िताब भी फ़रमाया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्हों ने कहा:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़त्ह-ए-मक्का के दिन फ़रमाया: "अब हिज्रत नहीं लेकिन जिहाद और नीयत बाक़ी है और जब तुम्हें जिहाद के लिए निकलने को कहा जाए तो तुम जिहाद के लिए निकलो और इस शहर मक्का को अल्लाह ने हरम क़रार दिया है उस दिन से जिस दिन आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है। तो यह रोज़-ए-क़ियामत तक अल्लाह की हुरमत से हरम है और मुझ से पहले किसी के लिए इस में जंग जाइज़ नहीं हुई और मेरे लिए भी दिन की एक घड़ी के लिए ही जाइज़ हुई है। तो यह शहर क़ियामत के रोज़ तक अल्लाह तआला की हुरमत से हरम है। इस का कांटा न तोड़ा जाए और इस का शिकारी जानवर न बुडकाया जाए यानी इस को डराया न जाए। कोई इस की गिरी पड़ी चीज़ न उठाई जाए मगर वही जो इसे शिनाख़्त कराए और इस का घास न काटा जाए।" हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा "या रसूलुल्लाह! इज़ख़िर को मुस्तसना क़रार दें।" इज़ख़िर भी घास की एक क़िस्म है। क्योंकि यह उन के कारीगरों के काम आती है और वह उन के घरों के लिए दरकार है। फ़रमाया "सिवाए इज़ख़िर के।" आप ने फ़रमाया "ठीक है। इज़ख़िर को काट सकते हो अपने मक़ासिद के लिए।"

(सहीह बुख़ारी किताबुल जिज़्या वल मवादिआ बाब अस्मुल ग़ादिर लिल बर्रि वल फ़ाजिर हदीस 3189)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि:

"जब अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर मक्का फ़त्ह कर दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों में खड़े हुए और अल्लाह की हम्द व सना की। फिर आप ने फ़रमाया 'यक़ीनन अल्लाह ने मक्का को हाथी वालों से महफ़ूज़ रखा और उस ने अपने रसूल को और मोमिनीन को इस पर ग़लबा दे दिया। मुझ से पहले किसी के लिए वह जाइज़ न था और मेरे लिए भी दिन की एक घड़ी जाइज़ किया गया और मेरे बाद किसी के लिए जाइज़ न होगा' यानी फ़त्ह-ए-मक्का में किसी दिन की लड़ाई है तो वह मेरे लिए सिर्फ़ थोड़े वक़्त के लिए जाइज़ की गई है इस के बाद किसी को जाइज़ नहीं। तो न इस का शिकार भगाया जाए न इस के कांटे तोड़े जाएँ और न इस की गिरी पड़ी चीज़ जाइज़ होगी सिवाए एलान करने वाले के और जिस का कोई क़त्ल किया जाए तो उसे दो बातों का इख़्तियार है या उस को फ़िद्या दिया जाए या क़िसास ले।" हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया "सिवाए इज़ख़िर के क्योंकि हम इस को अपनी क़ब्रों और अपने घरों में इस्तेमाल करते हैं।" तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "सिवाए इज़ख़िर घास के। ठीक है इस को काट सकते हो।" अबू शाह जो अहले यमन में से एक शख़्स था वह खड़ा हुआ उस ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरे लिए लिख दें।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अबू शाह के लिए लिख दें।" रावी कहते हैं मैं ने औज़ाई से पूछा कि इस की इस बात का क्या मतलब था कि 'मेरे लिए लिख दें। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे लिख दें।' इस का मतलब क्या था? उन्हों ने कहा इस का मतलब यह था कि ख़ुत्बा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है जो इस ने अभी सुन लिया है इस को उस को लिख के दे दें। चुनाँचे आप ने उस को लिखवा दिया।

(सहीह बुख़ारी किताब फ़िल लक़ता बाब कैफ़ तुआरफ़ लक़तत अहले मक्का हदीस 2434)

सीरत इब्ने हिशाम में बयान हुआ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काबा के दरवाज़े पर खड़े हो कर फ़रमाया: "अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। वह एक है इस का कोई शरीक नहीं। इस ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया और तन्हा सारे गिरोहों को शिकस्त दी। ऐ लोगो! तमाम फ़ख़्र, तमाम इन्तिक़ाम और तमाम ख़ून-बहा वह मेरे इन दोनों क़दमों के नीचे हैं मगर ख़ाना-ए-काबा की कुलीद-बरदारी और ज़म-ज़म से पानी पिलाने की ख़िदमत उन्हीं को मिलेगी जिन के पास पहले से यह ख़िदमत है। ऐ लोगो! जो शख़्स ग़लती से मारा जाए लकड़ी या कोड़े वग़ैरह से इस में पूरा ख़ून-बहा यानी दीयत सौ ऊँट हैं। ऐ क़ुरैश! ख़ुदावंद तआला ने तुम से ज़माना-ए-जाहिलियत की नख़्वत और फ़ख़्र को दूर कर दिया जो बाप-दादा के साथ किया जाता था। यह फ़ख़्र कोई नहीं रहा अब। सब लोग आदम की औलाद हैं और आदम की पैदाइश मिट्टी से है।" फिर आप ने यह आयत तिलावत की "याएय्युहन्नासु इन्ना ख़लक़्नाकुम मिन ज़करिन व उन्सा व जअलनाकुम शुऊबन व क़बाइला लितआरफ़ू, इन्ना अकरमकुम इन्दल्लाहि अतक़ाकुम" (अल-हुजुरात:14) "ऐ लोगो! यक़ीनन हम ने तुम्हें नर और मादा से पैदा किया और तुम्हें क़ौमों और क़बीलों में तक़सीम किया ता कि तुम एक दूसरे को पहचान सको। बला शुबह अल्लाह के नज़दीक तुम में सब से ज़्यादा मोअज़्ज़ वह है जो सब से ज़्यादा मुत्तक़ी है।" फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "ऐ क़ुरैश! तुम क्या ख़्याल करते हो कि मैं तुम से क्या सुलूक करूँगा?" क़ुरैश ने कहा (जो मुसलमान नहीं हुए थे) कि "आप जो कुछ करेंगे बेहतर करेंगे। आप मोअज़्ज़ भाई और मोअज़्ज़ भाई के बेटे हैं।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अच्छा तो फिर जाओ तुम सब आज़ाद हो।"

(सीरत इब्ने हिशाम पृष्ठ 744, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

एक रिवायत में है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अक़ूलु कमा क़ाल यूसुफ़: ला तसरीबा अलैकुमुल यौम, यग़फ़िरुल्लाहु लकुम व हुवा अरहमुर राहिमीन"

(अस-सुननुल कुबरा लिल बैहीक़ी जिल्द 9 पृष्ठ 200, हदीस 18275, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत 2003) "

मैं वही कहूँगा जो यूसुफ़ ने कहा था कि आज के दिन तुम पर कोई मलामत

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 07 August 2025 Issue No. 32

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

नहीं। अल्लाह तुम्हें बख़्श देगा और वह सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।" लोग आम माफ़ी का एलान सुन कर इस तरह निकले गोया कि अभी अभी क़ब्रों से निकले हों और इस्लाम में दाख़िल हो गए। यह बात सुन कर उन्हों ने फ़ौरन इस्लाम क़बूल करना शुरू कर दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु अहले मक्का को माफ़ करने के हवाले से वाक़िआ को इस तरह बयान करते हैं कि "जब आप इन बातों से फ़ारिग़ हुए और मक्का वाले आप की ख़िदमत में हाज़िर किए गए तो आप ने फ़रमाया 'ऐ मक्का के लोगो! तुम ने देख लिया कि ख़ुदा तआला के निशानात किस तरह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ पूरे हुए हैं। अब बताओ कि तुम्हारे इन ज़ुल्मों और इन शरारतों का क्या बदला दिया जाए जो तुम ने ख़ुदाई वाहिद की इबादत करने वाले ग़रीब बंदों पर किए थे?' मक्का के लोगों ने कहा 'हम आप से उसी सुलूक की उम्मीद रखते हैं जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों से किया था।' यह ख़ुदा की क़ुदरत थी कि मक्का वालों के मुँह से वही अलफ़ाज़ निकले जिन की पेशगोई ख़ुदा तआला ने सूरह-ए-यूसुफ़ में पहले से कर रखी थी और फ़त्ह-ए-मक्का से दस साल पहले बता दिया था कि तू मक्का वालों से वैसा ही सुलूक करेगा जैसा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों से किया था। अतः जब मक्का वालों के मुँह से इस बात की तस्दीक़ हो गई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मिसील थे और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह अल्लाह तआला ने उन को अपने भाइयों पर फ़त्ह दी थी तो आप ने भी एलान फ़रमा दिया कि 'ताल्लाहि ला तसरीबा अलैकुमुल यौम' ख़ुदा की क़सम! आज तुम्हें किसी क़िस्म का अज़ाब नहीं दिया जाएगा और न ही किसी क़िस्म की सरज़निश की जाएगी।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन - अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 347-348)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि "जब आँहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का फ़त्ह कर लिया तो तमाम कुफ़्फ़ार गिरफ़्तार कर के आप के सामने पेश किए गए तो कुफ़्फ़ार ने ख़ुद अपने मुँह से उस वक़्त इक़रार किया कि हम बबाअस अपने सख़्त जराइम के वाजिबुल क़त्ल हैं और अपने तईं आप के रहम के सुपुर्द करते हैं तो आप ने सब को बख़्श दिया और इस मौक़े पर माफ़ी के लिए इस्लाम की भी शर्त न लगाई लेकिन वह लोग यह अख़लाक-ए-करीमाना देख कर ख़ुद बह ख़ुद मुसलमान हो गए।"

(चश्मा-ए-मारिफ़त, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 23 पृष्ठ 235)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक और जगह पर फ़रमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अख़लाक़ी ताक़त का कमाल उस वक़्त ज़हन में आ सकता है जब कि उस ज़माने की हालत पर निगाह की जाए। मुख़ालिफ़ों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुयाइयों को जिस क़द्र तकलीफ़ें पहुँचाईं और इस के बालमुक़ाबिल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसी हालत में जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पूरा इक़्तिदार और इख़्तियार हासिल था उन से जो कुछ सुलूक किया वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उलूव्व-ए-शान को ज़ाहिर करता है। अबू जहल और इस के दूसरे रफ़ीक़ों ने कौन सी तकलीफ़ थी जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जाननिसार ख़ादिमों को नहीं दी। ग़रीब मुसलमान औरतों को ऊँटों से बाँध कर विपरीत दिशाओं में दौड़ाया और वह चीर जाती थीं।" दो हिस्से हो जाते थे। "महज़ इस गुनाह पर कि वह 'ला इलाहा इल्लल्लाह' पर क्यों क़ाइल हुईं मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के मुक़ाबिल सब्र व बर्दाश्त से काम लिया और जबकि मक्का फ़त्ह हुआ तो 'ला तसरीबा अलैकुमुल यौम' (यूसुफ़:93) कह कर माफ़ फ़रमाया। यह किस क़द्र अख़लाक़ी कमाल है जो किसी दूसरे नबी में नहीं पाया जाता। अल्लाहुम्मा सल्ली अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मद।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 485, एडिशन 2022)

फिर आप (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं: "मक्का में जिन लोगों ने दुख दिए थे, जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का को फ़त्ह किया तो आप चाहते तो सब को ज़बह कर देते मगर आप ने रहम किया और 'ला तसरीबा अलैकुमुल यौम' (यूसुफ़:93) कह दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बख़्शना था कि सब मुसलमान हो गए। अब इस क़िस्म के अज़ीमुश्शान अख़लाक-ए-फ़ाज़िला क्या किसी नबी में पाए जाते हैं? हरगिज़ नहीं। वह लोग जिन्हों ने आप की ज़ात-ए-ख़ास और अज़ीज़ों व सहाबा को सख़्त तकलीफ़ें दी थीं और नाकाबिल-ए-अफ़्व इज़ाएँ पहुँचाई थीं, आप ने सज़ा देने की क़ुव्वत और इक़्तिदार को पा कर फ़िलफ़ौर उन को बख़्श दिया। हालाँकि अगर उन को सज़ा दी जाती तो यह बिल्कुल इंसाफ़ और अद्ल था मगर आप ने उस वक़्त अपने अफ़्व और करम का नमूना दिखाया। यह वह उमूर थे कि अतिरिक्त मोजिज़ात के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर मोअस्सिर हुए थे। इस लिए आप 'इस्म-ए-बामुसम्मा' मुहम्मद हो गए थे सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। और ज़मीन पर आप की हम्द होती थी और उसी तरह आसमान पर भी आप की तारीफ़ होती थी और आसमान पर भी आप मुहम्मद थे। यह नाम आप का अल्लाह तआला ने बतौर उदाहरण के दुनिया को दिया है। जब तक इंसान इस क़िस्म के अख़लाक अपने अंदर पैदा नहीं करता..." आप फ़रमाते हैं कि "जब तक इंसान इस क़िस्म के अख़लाक अपने अंदर पैदा नहीं करता कुछ फ़ायदा नहीं होता। अल्लाह तआला की मुहब्बत कामिल तौर पर इंसान अपने अंदर पैदा नहीं कर सकता जब तक नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक और तर्ज़-ए-अमल को अपना रहबर और हादी न बना ले।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 425-426, एडिशन 2022)

अल्लाहुम्मा सल्ले-अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मद। बाक़ी क़िस्से बाद में आगे वर्णन करूँगा।

इस वक़्त दो मरहूमीन का ज़िक्र भी करना चाहता हूँ और बाद में उन का जनाज़ा-ए-ग़ाइब पढ़वाऊँगा। पहला है सैय्यदा लुब्ना अहमद साहिबा, सैय्यद मौलूद अहमद साहिब मरहूम की पत्नी

थीं। पिछले दिनों में इकहत्तर वर्ष की उम्र में उन की वफ़ात हो गई।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसिया थीं। मर्कज़ी तौर पर तो नहीं लेकिन अपने मुहल्ले और हल्क़े के तौर पर उन को लजना में ख़िदमत का मौक़ा मिलता रहा। उन की शादी सैय्यद मौलूद अहमद साहिब से हुई थी जो साहिबज़ादी उम्मतुल हकीम बेगम साहिबा और सैय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र शाह साहिब के बेटे थे। उन का निकाह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने पढ़ाया था। क्योंकि इसमें कुछ नसीहतें भी हैं इस लिए मैं इस निकाह के भी बाज़ अलफ़ाज़ पढ़ देता हूँ। यह आजकल के रिश्तों के लिए भी फ़ायदा-मंद हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने फ़रमाया था कि पति पत्नी रिश्ते दरख़्त के पैवंद की मानिंद होते हैं जिन्हें शुरू में बड़ा संभाल कर रखना पड़ता है। क़ुरआन करीम की हिदायत के मुताबिक़ इस पैवंद को 'क़ौल-ए-सदीद' के धागों से बाँधना पड़ता है तब जाकर इस की हिफ़ाज़त होती है और इस की ज़िम्मेदारी न सिर्फ़ हर दो पति और बीवी पर बल्कि उन के ख़ानदानों पर, उन के माहौल पर बल्कि उन के दोस्तों पर भी निर्धरित होती है क्योंकि बहुत सी ख़राबियाँ बद-ज़न्नियों के नतीजे में या चुगलियों के नतीजे में या बे-सब्री के नतीजे में या तैश के नतीजे में पैदा हो जाती हैं और उन को रोकने के लिए 'क़ौल-ए-सदीद' एक बहुत ही मज़बूत धागा है।

फिर आप रहमहुल्लाह ने फ़रमाया था कि ख़ुदा करे कि जिस निकाह का मैं इस वक़्त एलान कर रहा हूँ वह हर दो ख़ानदानों के लिए बहुत बा-बरकत हो। जमाअत के लिए भी बा-बरकत हो और इंसानियत के लिए भी बा-बरकत हो और ख़ादिम-ए-दीन नस्ल इस से चले और कह सकते हैं बल्कि मैं कह सकता हूँ क्योंकि रिश्तेदारी भी थी कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के इन अलफ़ाज़ को मोहतरमा लुब्ना साहिबा ने अपने रिश्तों के हक़ में निभाने की, संभालने की कोशिश की। फिर आप रहमहुल्लाह ने यह भी फ़रमाया कि आज मैं जिन का निकाह कर रहा हूँ यह मेरी छोटी हमशीरा उम्मतुल हकीम साहिबा और सैय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र शाह साहिब के बेटे सैय्यद मौलूद अहमद हैं और बेटी जो है, बच्ची जो है डॉक्टर सैय्यद ग़ुलाम मुजतबा साहिब की बेटी है। फिर डॉक्टर साहिब क्योंकि वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी डॉक्टर थे। अफ़्रीक़ा में रहे। शुरू में जब नुसरत जहाँ का एलान हुआ उस वक़्त इब्तिदाई वाक़िफ़ीन डॉक्टरों में से थे। उन का हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने ज़िक्र किया कि डॉक्टर साहिब उन इब्तिदाई डॉक्टरों में से हैं जिन्हों ने मग़रिबी अफ़्रीक़ा में बतौर

शेष पृष्ठ 7 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad